दस्ते सबा

(उर्दू शायरी)

लेखक

फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़'

१९५८

आत्माराम एण्ड सन्स

प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता

काश्मीरी गेट

दिल्ली-६

प्राक्कथन

एक ज़माना हुआ, जब ग़ालिब ने लिखा था कि जो आँख क़तरे में दजला[1] नहीं देख सकती, दीदाए-बीना[2] नहीं बच्चों का खेल है। अगर ग़ालिब हमारे हम-अस्त्र[3] होते, तो ग़ालिबन कोई-न-कोई नाक़िद[4] ज़रूर पुकार उठता कि ग़ालिब ने बच्चों के खेल की तौहीन की है, या यह कि ग़ालिब अदब में प्रापेगैण्डा के हामी हैं। शायर की आँख को क़तरे में दजला देखने की तलक़ीन करना सरीह प्रापेगैण्डा है। इस आँख को तो महज़ हुस्न से गरज़ है, और हुस्न अगर क़तरे में दिखाई दे जाय, तो वह क़तरा दजला का हो या गली की बदररौ का, शायर को इससे क्या सरोकार। यह दजला देखना-दिखाना हकीम, फ़ल्सफ़ी या स्यासतदान का काम होगा, शायर का काम नहीं है।

अगर इन हज़रात का कहना सही होता, तो "आबरू-शेवाए-अहले-हुनर" रहती या जाती? अहले हुनर का काम यक़ीनन बहुत सहल हो जाता। लेकिन खुशकिस्मती या बदकिस्मती से फ़ने-सुख़न[5] (या कोई और फ़न) बच्चों का खेल नहीं है। इसके लिए तो ग़ालिब का दीदाए-बीना भी काफ़ी नहीं। इसलिए काफ़ी नहीं कि शायर या अदीब को क़तरे में दजला देखना ही नहीं, दिखाना भी होता है। मज़ीद-बरआँ[6] अगर ग़ालिब के दजला से ज़िन्दगी और मौजूदात[7] का निज़ाम मुराद लिया जाय, तो अदीब ख़ुद भी इसी दजला का एक क़तरा है। इसके मानी ये हैं कि दूसरे अनगिनत क़तरों से मिलकर इस दरिया के रुख, इसके बहाव,

---

१. एक दरिया का नाम। २. देख सकने वाली आँख। ३. सम-कालीन। ४. आलोचक। ५. काव्य-कला ६. इसके अतिरिक्त। ७. सृष्टि।

इसकी हैयत और इस की मंज़िल के तअय्युन[1] की ज़िम्मेदारी भी अदीब के सर आन पड़ती है।

यों कहिये कि शायर का काम महज़ मुशाहदा[2] ही नहीं, मुजाहदा[3] भी उस पर फ़र्ज़ है। गिर्दोपेश के मुज्तरिब[4] क़तरों में ज़िन्दगी के दजला का मुशाहदा उसकी बीनाई पर है। इसे दूसरों को दिखाना उसकी फ़नी दस्तरस पर, उसके बहाव में दखल-अन्दाज़ होना उसके शौक की सलाबत[5] और लहू की हरारत पर।

और ये तीनो काम मुसलिसल काविश[6] और जद्दोजहद चाहते हैं।

निज़ामे-ज़िन्दगी किसी हौज़ का ठहरा हुआ, संग-बस्ता, मुक़य्युद पानी नही है, जिसे तमाशाई[7] की एक गलत-अन्दाज़ निगाह इहाता कर सके। दूर दराज़ ओझल, दुश्वार-गुज़ार पहाड़ियों में बर्फ़ पिघलती हैं, चश्मे उबलते हैं, नदी-नाले पत्थरों को चीर कर चट्टानों को काट कर आपस में हम-किनार[8] होते हैं। और फिर यह पानी कटता-बढ़ता घाटियों, वादियों, जंगलों और मैदानों में सिमटता और फैलता चला जाता है। जिस दीदाए-बीना ने इन्सानी तारीख में यमे-ज़िन्दगी[9] के ये नक़ूशो-मराहिल नहीं देखे, उसने दजला का क्या देखा है? फिर शायर की निगाह इन गुज़श्ता[10] और हालिया[11] मुकामात तक पहुँच भी गई, लेकिन इनकी मन्ज़र-कशी में नुत्को लब[12] ने यावरी[13] न की या अगली मंज़िल तक पहुँचने के लिए जिस्मो जान जहूद व तलब पर राज़ी न हुए; तो भी शायर अपने फ़न से पूरी तरह सुर्ख़रू नहीं है।

ग़ालिबन इस तवीलो अरीज़[14] इस्तिआरे[15] को रोज़मर्रा अल्फ़ाज में बयान करना ग़ैर ज़रूरी है। मुझे कहना सिर्फ़ यह था कि हयाते-इन्सानी की इजतिमाई जद्दोजहद का इद्राक[16] और इस जद्दोजहद में हस्बे

---

१. निश्चित करना। २. देखना। ३. प्रयत्न। ४. व्याकुल। ५. दृढ़ता। ६. कोशिश। ७. देखने वाला। ८. आलिंगन करना। ९. जीवन सागर। १०. गुज़रे हुए। ११. वर्तमान। १२. बोलने की शक्ति और होंठ। १३. सहायता। १४. लम्बे-चौड़े। १५. अलंकार। १६. समझ।

तौफ़ीक़ शरकत जिन्दगी का तक़ाज़ा ही नहीं फ़न का भी तक़ाज़ा है।

फ़न इसी जिन्दगी का एक जुज़्व और फ़नी जद्दोजहद इसी जद्दोजहद का एक पहलू है। यह तक़ाज़ा हमेशा क़ाइम रहता है, इसलिए तालबे फ़न के मुजाहदे का कोई निर्वाण नहीं है। उसका फ़न एक दाइमी कोशिश है और मुस्तकिल काविश। इस कोशिश में कामरानी या नाकामी तो अपनी अपनी तौफ़ीक़ और इस्तितायत[1] पर है, लेकिन कोशिश में मसरूफ़ रहना बहर तौर मुमकिन भी है और लाज़िम भी।

ये चन्द सफ़हात भी इसी नौ[2] की एक कोशिश हैं। मुमकिन है कि फ़न की अज़ीम ज़िम्मेदारियों से उहदा-बरआ होने की कोशिश के मुज़ाहरे में भी नुमाइश या तअल्ली[3] और खुद पसन्दी का एक पहलू निकलता हो, लेकिन कोशिश कैसी भी हक़ीर क्यों न हो, ज़िन्दगी या फ़न से फ़रार और शर्मसारी पर फ़ाइक़[4] है।

सैण्ट्रल जेल, हैदराबाद (सिंध)
१६ सितम्बर, १९५२

'फ़ैज़'

१. शक्ति। २. क्षमता। ३. किस्म। ४. अपनी बड़ाई।

लेखक परिचय

फ़ैज़ अहमद 'फैज़' इस समय उर्दू के सबसे प्रसिद्ध और लोकप्रिय लेखक हैं। उन्होंने सन् ३६-३७ के आस-पास लिखना शुरू किया और आरम्भ ही से प्रगतिशील लेखक संघ से सम्बन्धित रहे। युद्ध से पहले आप एम० ए० ओ० कॉलेज में प्रोफ़ेसर थे। आप युद्ध में फासिस्टवाद की हार चाहते थे। इसलिए प्रोफेसरी छोड़कर सेना में भर्ती हो गये और कैप्टन के पद पर नियुक्त हुए।

जब युद्ध समाप्त हुआ तो आप लाहौर चले गये और मियाँ इफ्तखारुद्दीन के प्रगतिशील पत्रों अंग्रेज़ी पाकिस्तान टाइम्ज़ और उर्दू इमरोज़ के सम्पादक बने। आपके सम्पादन में इन पत्रों को आशातीत सफलता प्राप्त हुई। इस समय ये पाकिस्तान के बहुत ही प्रभावशाली पत्र हैं और जनवादी नीतियों का अनसरण करते हैं।

पाकिस्तान सरकार ने आपको प्रसिद्ध रावलपिंडी षड्यन्त्र केस में गिरफ़्तार करके जेल में डाल दिया। चार साल क़ैद की सज़ा हुई। प्रगतिशील लेखक संघ के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री और कम्यूनिस्ट नेता सजाद ज़हीर आपके अन्तरंग मित्र हैं। रावलपिण्डी केस में वह भी आपके साथ ही गिरफ़्तार हुए थे। काफी समय एक साथ जेल में रहे और बिना घबराये साहित्य रचना करते रहे।

इस संग्रह की अधिकांश कविताएँ जेल में लिखी गई हैं और उनमें कवि ने अपनी मनोगत भावनाएँ अत्यन्त सरस भाषा में और कलात्मक ढंग से व्यक्त की है। फ़ैज़ रोमांस और सामायिक घटनाओं में कुछ ऐसा सामंजस्य उत्पन्न करते हैं कि उनकी रचनाएँ मन को मोह लेती हैं। उनके मिसरों की घुलावट, उनकी उपमायें और उनके अनूठे और नये प्रतीक सिर्फ़ उन्हीं का हिस्सा है। फ़ैज़ प्रगतिशील हैं, साहित्य की

प्रयोगिता में उनका विश्वास है और वह साहित्य को प्रचार का साधन मानते हैं, लेकिन कोई भी व्यक्ति उनकी रचनाओं पर प्रचार का आरोप नहीं लगाता।

वह कम बोलते और कम लिखते हैं। बड़े गम्भीर व्यक्ति हैं। पिछले साल एशियाई लेखक सम्मेलन में पाकिस्तान से जो डेलीगेशन आया था, फ़ैज़ उसके नेता थे। भारतीय जनता ने उनका कलाम जिस शौक से सुना उससे जाहिर है कि वह पाकिस्तान ही मे नहीं हिन्दुस्तान में भी लोकप्रिय हैं। उर्दू में उनके छोटे-छोटे तीन कविता-संग्रह प्रकाशित हुए हैं। प्रस्तुतः संग्रह में उनकी सब कविताएँ संकलित कर दी गई हैं।

—हंसराज 'रहबर'

विषय-सूची

ऐ हबीबे अम्बर-दस्त[1] !

एक अजनबी ख़ातून के नाम,
ख़ुशबू का तुहफ़ा वसूल होने पर।

किसी के दस्ते-अनायत[2] ने कुंजे-ज़िन्दाँ[3] में,
किया है आज अजब दिल नवाज़[4] बन्दोबस्त।
महक रही है फ़िज़ा ज़ुल्फ़े यार की सूरत[5],
हवा है गर्मी-ए-ख़ुशबू से इस तरह सरमस्त।
अभी अभी कोई गुज़रा है गुलबदन[6] गोया,
कहीं क़रीब से गेसू-बदोश[7] ग़ुंचा बदस्त[8]।

लिये हैं बूए-रफ़ाक़त[9] अगर हवाए-चमन,
तो लाख पहरे बिठाए क़फ़स[10] पे ज़ुल्म-परस्त[11]।

---

[1] ऐ प्रिया, जिसके हाथ अम्बर जैसी सुगन्धि रखते हैं। [2] कृपा का हाथ। [3] कारागार का कोना। [4] दिल को आनन्दित करने वाला। [5] भाँति। [6] फूल जैसा शरीर रखने वाला। [7] कंधे पर केश डाले हुए। [8] हाथ में कलियाँ लिए हुए। [9] मित्रता की सुगन्धि। [10] पिंजरा। [11] अत्याचार करने वाला।

हमेशा सब्ज़ रहेगी वह शाख़े-मिहरो-वफ़ा,
कि जिसके साथ बँधी है दिलों की फ़तहो-शिकस्त।

यह शिअ्रे हाफ़िज़े-शीराज़ ऐ सबा ! कहना,
मिले जो तुम से कहीं वह हबीबे-अम्बरदस्त।
"ख़लल पज़ीर बवद हर बिना कि मे बीनी,
बजुज़ बिनाए मुहब्बत कि ख़ाली आज ख़लल अस्त[१]।"

सैण्ट्रल जेल, हैदराबाद
२८-२९ अप्रैल, ५२ ई०

---

[१] जो भी आधार तू देख रहा है, वह दोष-युक्त है। सिवाय प्रेम के आधार के, जो दोष से मुक्त है।

ग़ज़ल

सितम की रसमें बहुत थीं लेकिन,
न थीं तिरी अंजुमन[1] से पहले।
सज़ा, ख़ताए-नज़र से पहले,
अताब[2], जुर्मे सुख़न से पहले।
जो चल सको तो चलो कि राहे वफ़ा,
बहुत मुख़्तिसर हुई है।
मुक़ाम है अब कोई न मंज़िल,
फ़राज़े-दारो-रसन[3] से पहले।
नहीं रही अब जनूँ की जंज़ीर
पर वह पहली अजारादारी[4]।
गरिफ़्त[5] करते है करने वाले,
ख़िरद[6] पे दीवानापन से पहले।
करे कोई तेग़ का नज़ारा,
अब उनको यह भी नहीं गवारा।

---

[1] सभा। [2] अत्याचार। [3] फाँसी के तख़्ते और रस्से की बुलन्दी। [4] ठेका। [5] आलोचना। [6] बुद्धि।

बज़िद है क़ातिल कि जाने-बिस्मिल[१],
फ़िगार[२] हो जिस्मो तन से पहले ।
ग़रूरे-सरवो-समन से कह दो,
कि फिर वही ताजदार होंगे ।
जो ख़ारो-ख़स[३]-वाली-ए चमन[४] थे,
उरूजे[५]-सरवो-समन से पहले ।
इधर तक़ाज़े हैं मस्लिहत[६] के,
उधर तक़ाज़ा-ए-दर्दे-दिल है ।
ज़ुबाँ सँभालें कि दिल सँभालें,
असीर[७] ज़िक्रे-वतन से पहले ।

हैदराबाद जेल
१७-२२ मई, ५४ ई०

---

[१] घायल । [२] ज़ख़्मी । [३] काँटे और कूड़ा करकट । [४] बाग़ के मालिक । [५] उन्नति । [६] भलाई, हित । [७] बन्दी ।

ग़ज़ल

माम शब दिले-वहशी तलाश करता है,
हर एक सदा[1] में तिरे हर्फ़े-लुत्फ़[2] का आहँग[3] ।
र एक सुबह मिलाती है बार-बार नज़र,
तिरे दहन[4] से हर इक लालाओ-गुलाब का रंग ।

म्हारे हुस्न से रहती है हम-किनार[5] नज़र,
तुम्हारी याद से दिल हम-कलाम[6] रहता है ।
ही फ़रागते-हिज्राँ[7] तो रहेगा तै,
तुम्हारी चाह का जो-जो मुक़ाम रहता है ।

हैदराबाद जेल
१५ मई, ५३ ई०

आवाज़ । [2] कृपा के शब्द । [3] लय, स्वर । [4] मुँह । [5] आलिंगन किये
बातें करता हुआ । [7] जुदाई की फ़ुर्सत ।

ग़ज़ल

सुबह् की आज जो रँगत है वह पहले तो न थी,
क्या ख़बर आज ख़रामाँ[१] सरे गुलज़ार[२] है कौन ।
शाम गुलनार हुई जाती है देखो तो सही,
यह जो निकला है लिए, मशअ़ले-रुख़सार[३] है कौन ।
रात महकी हुई आई है कहीं से पूछो,
आज बिखराये हुए ज़ुल्फ़े-तरहदार[४] है कौन ।
फिर दरे-दिल पे कोई देने लगा है दस्तक[५],
जानिये फिर दिले-वहशी का तलबगार है कौन ।

जिन्नाह हस्पताल, कराची
जुलाई, ५३ ई०

---

[१] टहलता हुआ । [२] बाग़ में । [३] कपोलों की ज्वाला । [४] अनोखे ढब वाली । [५] खटखटाना ।

ग़ज़ल

शामे-फ़िराक़ अब न पूछ,
आई और आके टल गई ।
दिल था कि फिर बहल गया,
जाँ थी कि फिर सँभल गई ।
बज़्मे-ख़याल में तिरे हुस्न
की शमअ' जल गई ।
दर्द का चाँद बुझ गया,
हिज्र की रात ढल गई ।
जब तुझे याद कर लिया,
सुबह महक महक उठी ।
जब तिरा गम जगा लिया,
रात जब मचल मचल गई ।
दिल से तो हर मुआ'मला
करके चले थ साफ़ हम ।
कहने में उनके सामने,
बात बदल बदल गई ।

८

आखिरे शब के हमसफर,
फैज़ न जाने क्या हुए।
रह गई किस जगह सबा,
सुबह किधर निकल गई।

जिन्नाह हस्पताल,
कराची
जुलाई, ५३ ई०

ग़ज़ल

रहे खिज़ाँ में तलाशे-बहार करते रहे,
शबे-स्याह[1] से तलब हुस्ने यार करते रहे।
ख़याले-यार कभी ज़िक्रे यार करते रहे,
इसी मताअ[2] पे हम रुज़गार करते रहे।
नहीं शिकायते-हिज्राँ कि इस वसीले से,
हम उनसे रिश्ता[3]-ए-दिल उस्तवार[4] करते रहे।
वे दिन कि कोई भी जब वजहे इन्तिज़ार न थी,
हम उनमें तेरा सबा इन्तिज़ार करते रहे।
हम अपने राज़ पर नाज़ाँ थे शर्मसार न थे,
हर इक से हम सख़ुने-राज़दार करते रहे।
ज़ियाए-बज़्मे-जहाँ[5] बार-बार माँद हुई,
हदीसे-शोला[6]-रुख़ाँ[6] बार-बार करते रहे।
उन्हीं के फ़ैज़ से बाज़ारे-अक़्ल रौशन है,
जो गाह-गाह[7] जनूँ अख़्तियार करते रहे।

जिन्नाह हस्पताल, कराची
२१ अगस्त, ५३ ई०

---

[1] काली रात। [2] पूँजी। [3] सम्बन्ध। [4] दृढ़। [5] संसार-सभा की ज्योति। [6] आग की लपट की भाँति भड़कते हुए मुखड़े वालों की कहानी। [7] कभी-कभी।

मुलाक़ात

यह रात उस दर्द का शजर[1] है,
जो मुझ से तुझ से अज़ीमतर[2] है।
अज़ीमतर है कि इस की शाखों,
में लाख मशअल-बकफ़[3] सितारों।
के कारवाँ फिर से खो गये हैं,
हज़ार महताब इसके साये।
में अपना सब नूर, रो गये हैं।

यह रात उस दर्द का शजर है,
जो मुझ से तुझ से अज़ीमतर है।
मगर इसी रात के शजर से,
ये चन्द लमहों के ज़र्द पत्ते।
गिरे हैं और तेरे गेसुओं में,
उलझ के गुलनार हो गये हैं।

---

[1] वृक्ष। [2] अधिक बड़ा। [3] हाथों में मशअल लिए हुए।

इसी की शबनम से ख़ामशी के,
ये चन्द क़त्रे तिरी जबीं[1] पर।
बरस के हीरे परो गये हैं।

२

बहुत स्यह है यह रात लेकिन,
इसी स्याही में रूनुमा[2] है।
वह नहरे-ख़ूं जो मिरी सदा से,
इसी के साये में नूरगर[3] है।
वह मौजे-ज़र[4] जो तिरी नज़र है।

वह ग़म जो इस वक़्त तेरी बाहों।
के गुलसिताँ में सुलग रहा है,
(वह ग़म जो इस रात का समर[5] है,)।
कुछ और तप जाये अपनी आहों,
की आँच में तो यही शरर[6] है।

हर इक स्यह शाख़ की कमाँ से,
जिगर में टूटे हैं तीर जितने।
जिगर से नीचे हैं, और हर इक
का हमने तेशा बना लिया है।

३

अलम-नसीबों,[7] जिगर फ़िगारों[8]
की सुबह अफ़्लाक[9] पर नहीं है।

---

[1] माथा। [2] व्यक्त। [3] ज्योति फैलाने वाली। [4] स्वर्ण-धारा। [5] फल। [6] चिनगारी। [7] जिनके भाग्य में दुःख हो। [8] जिनके जिगर घायल हों। [9] आसमानों।

जहाँ पे हम तुम खड़े हैं दोनों,
सहर[1] का रोशन उफ़क़[2] यहीं है।
यहीं पे ग़म के शरार खिलकर,
शफ़क़[3] का गुलजार बन गये हैं।
यहीं पे क़ातिल दुःखों के तेशे,
क़तार अन्दर क़तार किरनों।
के अतिशी[4] हार बन गये हैं।

यह ग़म जो इस रात ने दिया है,
यह ग़म सहर का यक़ीं बना है।
यक़ीं जो ग़म से करीमतर[5] है,
सहर जो शब से अज़ीमतर है।

मिण्टगुमरी जेल
१२ अक्टूबर से
३ नवम्बर तक, ५३ ई०

---

[1] प्रातः। [2] क्षितिज। [3] क्षितिज की लाली।
[4] ज्वालामय। [5] अधिक दयालु।

दो शअ्र

न आज लुत्फ़ कर इतना कि कल गुज़र न सके,
वह रात जो कि तिरे गैसुओं की रात नहीं ।

यह आर्ज़ू[1] भी बड़ी चीज़ है मगर हमदम[2],
विसाले यार फ़क़त आर्ज़ू की बात नहीं ।

[1] इच्छा । [2] साथी ।

ग़ज़ल

बात बस से निकल चली है,
दिल की हालत सँभल चली है।
अब जनूँ हद से बढ़ चला है,
अब तबीअत बहल चली है।
अश्क[1] खूँनाब[2] हो चले हैं,
ग़म की रंगत बदल चली है।
या योंही बुझ रही हैं शमएँ,
या शबे हिज्र टल चली है।
लाख पैग़ाम हो गये है,
जब सबा एक पल चली है।
जाओ अब सो रहो सितारो,
दर्द की रात ढल चली है।

मिण्टगुमरी जेल
२१ नवम्बर, ५३ ई०

---

[1] आँसू। [2] शुद्ध खून।

वासोख़्त

(दिल की जलन का हाल)

सच है हमीं को आपके शिकवे बजा न थे,
बेशक सितम जनाब के सब दोस्ताना थे ।

हाँ जो जफ़ा भी आपने की, काइदे से की,
हाँ हम ही कारबन्दे-उसूले-वफ़ा[1] न थे ।

आये तो यों कि जैसे हमेशा थे मेहरबाँ,
भूले तो यों कि गोया कभी आशना न थे ।

क्यों दादे-ग़म[2] हमीं ने तलब की बुरा किया,
हम से जहाँ में कुश्ता-ए-ग़म[3] और क्या न थे ।

गर फ़िक्रे जख़्म की तो ख़तावार हैं कि हम,
क्यों महवे-मदहे[4]-ख़ूबी-ए-तेग़े-अदा न थे ।

---

[1] वफ़ा के नियमों पर चलने वाले । [2] ग़म की प्रशंसा [3] ग़म के भरे हुए । [4] प्रशंसा मे मग्न ।

हर चारागर[1] को चारागरी से गुरेज़[2] था,

वरना हमें जो दुःख थे बहुत ला दवा न थे।

लब पर है तल्ख़ी-ए-मै-ए-अय्याम[3] वरना फ़ैज़,

हम तल्ख़ी-ए-कलाम पे माइल ज़रा न थे।

मिण्टगुमरी जेल

२४ नवम्बर, ५३ ई०

---

[1] इलाज करने वाला। [2] झिझक। [3] दिनों की शराब का कड़वापन।

ग़ज़ल

शाख़ पर ख़ूने-गुल रवाँ है वही,
शोख़ी-ए-रंगे-गुलसताँ है वही।
जाँ वही है तो जाने-जाँ है वही,
सर वही है तो आस्ताँ[1] है वही।
अब यहाँ मेहरबाँ नहीं कोई,
कूचा-ए-यारे-मेहरबाँ है वही।
बर्क़[2] सौ बार गिर के ख़ाक हुई,
रौनक़े-ख़ाके-आशियाँ है वही।
आज की शब विसाल[3] की शब है,
दिल से हर रोज़ दास्ताँ[4] है वही।
चाँद तारे इधर नहीं आते,
वरना ज़िन्दाँ में आसमाँ है वही।

मिण्टगुमरी जेल

---

[1] चौखट। [2] बिजली। [3] मिलन। [4] राम कहानी।

ग़ज़ल

कब याद में तेरा साथ नहीं.

कब हाथ में तेरा हाथ नहीं ।

सद शुक्र कि अपनी रातों में,

अब हिज्र[1] की कोई रात नहीं ।

मुश्किल है अगर हालात वहाँ,

बिल बेच आएँ जाँ दे आयें ।

दिल वालो कूचा-ए-जानाँ[2] में,

क्या ऐसे भी हालात नहीं ।

जिस धज से कोई मक़्तल[3] में गया,

वह शान सलामत रहती है ।

यह जान तो आनी जानी है,

इस जाँ की तो कोई बात नहीं ।

मैदाने-वफ़ा दरबार नहीं,

याँ नामो-नसब[4] की पूछ कहाँ ।

आशिक़ तो किसी का नाम नहीं,

कुछ इश्क़ किसी की ज़ात नहीं ।

---

[1] जुदाई । [2] प्रियतम । [3] क़त्ल की जगह । [4] ख़ानदान ।

गर बाज़ी इश्क़ की बाज़ी है,
जो चाहो लगादो डर कैसा ।
गर जीत गये तो क्या कहना,
हारे भी तो बाज़ी मात नहीं ।

मिण्टगुमरी जेल

ग़ज़ल

हम पर तुम्हारी चाह का इल्ज़ाम ही तो है,
दुश्नाम[1] तो नहीं है यह इनाम[2] ही तो है।

करते हैं जिस पे ता'न[3] कोई जुर्म तो नहीं,
शौक़े-फ़ज़ूलो-उल्फ़ते-नाकाम[4] ही तो है।

दिल मुद्दई[5] के हर्फ़े-मुलामत[6] से शाद है,
ऐ जाने-जाँ यह हर्फ़ तेरा नाम ही तो है।

दिल नाउमीद तो नहीं नाकाम ही तो है,
लम्बी है ग़म की शाम, मगर शाम ही तो है।

दस्ते-फ़लक[7] में गर्दिशे तक़दीर तो नहीं,
दस्ते-फ़लक में गर्दिशे-अय्याम ही तो है।

---

[1] गाली। [2] मान, बख्शिश। [3] बुरा भला कहना। [4] असफल प्रेम।
[5] झूठा दावा करने वाला। [6] बुराई के शब्द। [7] आकाश का हाथ।

आख़िर तो एक रोज़ करेगी नज़र वफ़ा,
वह यारे-ख़ुश ख़साल[1] सरे-बाम[2] ही तो है।

भीगी है रात 'फ़ैज़' ग़ज़ल इब्तिदा करो,
वक़्ते-सरोद[3] दर्द का हंगाम[4] ही तो है।

मिण्टगुमरी जेल
९ मार्च, ५४ ई०

[1] अच्छी आदतों वाला। [2] छत पर। [3] गाना बजाना। [4] समय।

ऐ रौशनियों के शहर

सब्ज़ा सब्ज़ा सूख रही है,
फीकी ज़र्द दो-पहर ।
दीवारों को चाट रहा है,
तनहाई[1] का ज़हर ।
दूर उफ़क़ तक घटती बढ़ती,
उठती गिरती रहती है ।
कुहर की सूरत[2] बेरौनक़,
दर्दों की गदल लहर ।
बस्ता है इस कुहर के पीछे,
रौशनियों का शहर ।

---

[1] अकेलापन । [2] भाँति ।

ऐ रौशनियों के शहर

ऐ रौशनियों के शहर।

कौन कहे किस सिम्त है तेरी,
रौशनियों की राह।
हर जानिब बेनूर खड़ी है,
हिज्र की शहर-पनाह[1]।
थक कर हर सू बैठ रही है,
शौक़ की माँद सिपाह।

आज मेरा दिल फ़िक्र में है,
ऐ रौशनियों के शहर।

शब ख़ूँ[2] से मुँह फेर न जाये,
अरमानों की रौ।

---

[1] फसील। [2] रात को धावा बोलना।

ख़ैर हो तेरी लैलाओं की,
इन सब से कह दो ।
आज की शब जब दिये जलायें,
ऊँची रक्खें लौ ।

लाहौर जेल
मिण्टगुमरी जेल
२८ मार्च से १५ अप्रैल, ५४ ई०

ग़ज़ल

गुलों में रंग भरे बादे-नौबहार[1] चले,

चले भी आओ कि गुलशन का कारोबार चले।

क़फ़स उदास है यारो सबा से कुछ तो कहो,

कहीं तो बहरे-ख़ुदा[2] आज जिक्रे-यार चले।

कभी तो सुबह तेरे कुंजे-लब[3] से हो आग़ाज[4],

कभी तो शब सरे-काकुल[5] से मुश्कबार[6] चले।

बड़ा दर्द का रिश्ता यह दिल ग़रीब सही,

तुम्हारे नाम पे आयेंगे ग़मगुसार[7] चले।

जो हम पे गुजरी सो गुजरी मगर शबे-हिज्राँ,

हमारे अश्क तेरी आक़बत[8] संवार चले।

---

[1] नई बसन्त की पवन। [2] परमात्मा के लिये। [3] होठो का कोना। [4] आरम्भ। [5] लट। [6] कस्तूरी बखेरती हुई। [7] ग़म बाँटने वाले। [8] परलोक।

हुज़ूरे-यार हुई दफ़्तरे जनूँ की तलब,
गिरह में लेके गरेबाँ का तार तार चले।

मुक़ाम 'फ़ैज़' कोई राह में जचा ही नहीं,
जो कूए-यार[1] से निकले, तो सूए-दार[2] चले।

मिण्टगुमरी जेल
२९ जनवरी, ५४ ई०

---

[1] प्रियतम की गली। [2] फाँसी के तख़्ते की ओर।

हम, जो तारीक[1] राहों में मारे गये

तेरे होठों के फूलों की चाहत में हम,
दार[2] की ख़ुश्क टहनी पे वारे गये।
तेरे हाथों की शमम्रों की हसरत में हम,
नीम-तारीक राहों में मारे गये।

सूलियों पर हमारे लबों से परे,
तेरे होठों की लाली लपकती रही।
तेरी ज़ुल्फ़ों की मस्ती बरसती रही,
तेरे हाथों की चाँदी दमकती रही।

जब घुली तेरे राहों में शामे-सितम[3].
हम चले आये लाये यहाँ तक क़दम।
लब पे हर्फ़-ग़ज़ल, दिल में कंदीले-ग़म[4],
अपना ग़म था गवाही तेरे हुस्न की।
देख क़ायम रहे इस गवाही पे हम,
हम जो तारीक राहों में मारे गये।

---

[1] अँधेरी। [2] फाँसी का वृक्ष। [3] अत्याचार की शाम। [4] ग़म का दीपक।

ना रसाई[1] अगर अपनी तक़दीर थी,
तेरी उल्फ़त तो अपनी ही तदबीर थी।
किस को शिकवा[2] है गर शौक़ के सिलसिले,
हिज्र की क़त्लगाहों से सब जा मिले।

क़त्लगाहों से चुनकर हमारे अलम[3],
और निकलेंगे उश्शाक़[4] के काफ़ले।
जिनकी राहे तलब से हमारे क़दम,
मुख़्तसर कर चले दर्द के फासले।
कर चले जिनकी ख़ातिर जहाँगीर[5] हम,
जाँ गवाँ कर तेरी दिलबही[6] का भरम।
हम जो तारीक राहों में मारे गये।

मिण्टगुमरी जेल
१५ मई, ५४ ई०

---

[1] पहुँच न होना। [2] शिकायत। [3] झण्डे। [4] आशिक का बहुवचन है।
[5] विश्व व्यापक। [6] दिल को उड़ा ले जाने वाला सौंदर्य।

दो शअर

फ़िक्रे-सूदो-ज़ियाँ[1] तो छूटेगी,

नघ्यते-ईनो-आँ[2] तो छूटेगी।

ख़ैर दोज़ख़ में मै[3] मिले न मिले,

शैख़ साहब से जाँ तो छूटेगी।

[1] लाभ और हानि की चिन्ता। [2] यह और वह। [3] शराब।

ग़ज़ल

कुछ मुहत्सिबों[1] की ख़लवत[2] में,
कुछ वाइज़[3] के घर जाती है।

हम बादा-कशों[4] के हिस्से की,
अब जाम में कमतर[5] जाती है।

यों अर्ज़ो-तलब से कब ऐ दिल,
पत्थर दिल पानी होते हैं।

तुम लाख रज़ा[6] की ख़ू[7] डालो,
कब ख़ू-ए-सितमगर[8] जाती है।

बेदादगरों[9] की बस्ती है,
याँ दाद कहाँ ख़ैरात कहाँ।

सर फोड़ती फिरती है नादाँ,
फ़रियाद जो दर दर जाती है।

---

[1] आचरण की देख-रेख करने वालों। [2] एकान्त। [3] उपदेशक [4] शराब पीने वालों। [5] बहुत थोड़ी। [6] उसकी इच्छा में खुश रहना [7] आदत। [8] अत्याचार करने वाला। [9] अन्याइओं।

हाँ जाँ के ज़ियाँ[१] की हम को भी,
तश्वीश[२] है लेकिन क्या कीजे ।

हर रह जो उधर को जाती है,
मक़्तल से गुज़र कर जाती है ।

अब कूचा-ए-दिलबर का रह-रौ[३],
रहज़न[४] भी बने तो बात बने ।

पहरे से अदू[५] टलते ही नहीं,
और रात बराबर जाती है ।

हम अहले-क़फ़स[६] तनहा भी नहीं,
हर रोज़ नसीमे[७]-सुबहे-वतन ।

यादों से मुअत्तर आती है,
अश्कों से मुनव्वर[८] जाती है ।

मिण्टगुमरी जेल
१७ जून, ५४ ई०

[१] हानि । [२] चिन्ता । [३] राह चलने वाला यात्री । [४] डाका डालने वाला । [५] दुश्मन । [६] [illegible] रे के वासी । [७] पव[illegible] [८] ज्योति लिये हुए ।

दरीचा

गड़ी है कितनी सलीबें[1] मेरे दरीचे में।

हर एक अपने मसीहा के ख़ूँ का रंग लिये,
हर एक वस्ले-ख़ुदावन्द[2] की उमंग लिये।

किसी पे करते है अब्रे-बहार को कुर्बां,
किसी पे क़त्ले महे-ताबनाक[3] करते हैं।
किसी पे होती है सरमस्त शाख़सार[4] दो नीम[5],
किसी पे बादे-सबा को हलाक करते हैं।

हर आये दिन ये ख़ुदा बन्दगाने-मिहरो-जमाल[6],
लहू में ग़र्क़ मेरे ग़मकदे में आते हैं।
और आये दिन मेरी नज़रों के सामने इनके,
शहीद जिस्म सलामत उठाये जाते हैं।

मिण्टगुमरी जेल
दिसम्बर, ५४ ई०

---

[1] सूलियाँ। [2] प्रभु-मिलन। [3] चमकता हुआ चाँद। [4] टहनी। [5] दो टुकड़े। [6] दया और सौंदर्य रखने वाले।

दर्द आयेगा दबे पाँव

और कुछ देर में जब फिर मेरे तनहा दिल को,
फ़िक्र आयेगी कि तनहाई का क्या चारा करे।
दर्द आयेगा दबे पॉव लिये सुर्ख़ चिराग़,
वह जो इक दर्द धड़कता है कहीं दिल से परे।
शोला-ए-दर्द जो पहलू में लपक उट्ठेगा,
दिल की दीवार पे हर नक़्श दमक उट्ठेगा।
हल्क़ा-ए-ज़ुल्फ़ कहीं गोशा-ए-रुख़सार कहीं,
हिज्र का दश्त[1] कहीं गुलशने-दीदार[2] कहीं।
लुत्फ़[3] की बात कहीं प्यार का इक़रार कहीं,
दिल से फिर होगी मेरी बात कि ऐ दिल, ऐ दिल।
यह जो महबूब बना है तेरी तनहाई का,
यह तो महमाँ है घड़ी भर का चला जायेगा।
इससे कब तेरी मुसीबत का मुदावा[4] होगा,
मुश्तिअ़ल[5] होके अभी उठेंगे वहशी साये।
यह चला जायेगा रह जायेंगे बाक़ी साये,
रात भर जिनसे तेरा ख़ून ख़राबा होगा।

---

[1] जंगल। [2] दर्शन बगिया। [3] दया। [4] इलाज। [5] क्रुद्ध।

जंग ठहरी है कोई खेल नहीं है ऐ दिल,
दुश्मने-जाँ हैं सभी सारे के सारे क़ातिल।
यह कड़ी रात भी ये साये भी तनहाई भी,
दर्द और जंग में कुछ मेल नहीं है ऐ दिल।
लाओ सुलगाओ कोई जोशे-ग़ज़ब का अंगार,
तैश की आतिशे-हर्रार[1] कहाँ है लाओ।
वह दहकता हुआ गुलज़ार कहाँ है लाओ,
जिसमें गर्मी भी है, हरकत[2] भी, तवानाई[3] भी।
हो न हो अपने क़बीले का भी कोई लशकर,
मुन्तज़िर[4] होगा अँधेरे की फ़सीलों के उधर।
इनको शोलों के रजिज़[5] अपना पता तो देंगे,
ख़ैर हम तक वह न पहुँचे भी सदा तो देंगे।
दूर कितनी है अभी सुबह बता तो देंगे।

मिण्टगुमरी जेल
१ दिसम्बर, ५४ ई०

---

[1] दहकती हुई आग। [2] गति। [3] शक्ति। [4] प्रतीक्षा करने वाला।
[5] जोश पैदा करने वाले गीत।

दो शेअ़र

सुब्ह फूटी तो आसमाँ पे तेरे,
रंगे-रुख़सार[1] की फुहार गिरी,
रात छाई तो रूए-आलम[2] पर,
तेरी ज़ुल्फ़ों की आबशार गिरी।

[1] कपोलों का रंग। [2] दुनिया का मुखड़ा।

एक रजिज़

(जोश दिलाने वाला गीत)

आ जाओ, मैंने सुनली तेरे ढोल की तरंग,
आ जाओ, मस्त हो गई मेरे लहू की तरल,
आ जाओ एफ़्रीक़ा[1]

आ जाओ, मैंने ढोल से माथा उठा लिया,
आ जाओ, मैने छील दी आँखों से ग़म की छाल,
आ जाओ, मैंने नोच दिया बेकसी का जाल,
आ जाओ एफ़्रीक़ा

पंजे में हथकड़ी की कड़ी बन गई है गुर्ज़,
गर्दन का तौक़ तोड़ के ढाली है मैंने ढाल,
आ जाओ एफ़्रीक़ा

जलते है हर कछार में भालों के मृग नैन,
दुश्मन लहू से रात की कालक हुई है लाल,
आ जाओ एफ़्रीक़ा

---

[1] अफ़रीक़ा के स्वतन्त्रता-प्रेमी लोगो का नारा ।

धरती धड़क रही है मेरे साथ एफ्रीक़ा,
दरिया थरक रहा है तो बन दे रहा है ताल,
आ जाओ एफ्रीक़ा

मैं एफ्रीक़ा हूँ धार लिया मैंने तेरा रूप,
मैं तू हूँ मेरी चाल है तेरे बबर की चाल,
आ जाओ एफ्रीक़ा
ओ, बबर की चाल
आ जाओ एफ्रीक़ा।

मिण्टगुमरी जेल
१४ जनवरी, ५५ ई०

ग़ज़ल

गर्मी-ए-शौक़े-नज़ारा का असर तो देखो,
गुल खिले जाते है वह साया-ए-दर तो देखो ।
ऐसे नादाँ भी न थे जाँ से गुज़रने वाले,
नासिहो[1], पन्दगरो[2], राह गुज़र तो देखो ।
वह तो वह है तुम्हे हो जायेगी उल्फ़त मुझ से,
इक नजर तुम मेरा, महबूबे-नज़र तो देखो ।
वह जो अब चाक गरेबाँ भी नहीं करते है,
देखने वालो कभी उनका जिगर तो देखो ।
दामने-दर्द को गुलजार बना रक्खा है,
आओ इक दिन दिले-पुर-खूँ का हुनर तो देखो ।
सुबह की तरह चमकता है शबे-ग़म का उफ़क़,
'फैज़' ताबिन्दगी-ए-दीदा-ए-तर[3] तो देखो ।

मिण्टगुमरी जेल
४ मार्च, ५५ ई०

[1] उपदेश करने वाले । [2] उपदेशकों । [3] आँसुओं भरी आँख की चमक ।

यह फ़स्ल उमीदों की हमदम

सब काट दो
बिस्मिल[1] पौदों को
बे आब सिसकते मत छोड़ो।
सब नोच लो
बेकल फूलों को
शाख़ों पे बिलकते मत छोड़ो।

यह फ़स्ल उमीदों की हमदम,
इस बार भी ग़ारत[2] जायेगी।
सब मेहनत सुबहों शामों की,
अब के भी अकारत जायेगी।

खेती के कोनों खिद्रों में,
फिर अपने लहू की खाद भरो।
फिर मिट्टी सींचो अश्कों से,
फिर अगली रुत की फ़िक्र करो।

[1] घायल। [2] नष्ट।

फिर अगली रुत की फ़िक्र करो,
जब फिर इक बार उजरना है।
इक फ़स्ल पकी तो भर पाया,
जब तक तो यही कुछ करना है।

मिण्टगुमरी जेल
३० मार्च, ५५ ई०

बुनियाद कुछ तो हो

(क़व्वाली)

कूए-सितम की ख़ामशी आबाद कुछ तो हो,
कुछ तो कहो सितम-कशो[1] फ़रियाद कुछ तो हो,
बेदादगर से शिकवा-ए-बेदाद कुछ तो हो,
बोलो कि शोरे-हश्र[2] की ईजाद कुछ तो हो,

मरने चले तो सतवते-क़ातिल[3] का ख़ौफ़ क्या,
इतना तो हो कि बाँधने पाये न दस्तो-पा[4],
मक़्तल में कुछ तो रंग जमे जश्ने-रक़्स[5] का,
रंगीं लहू से पंजा-ए-सय्याद कुछ तो हो,
ख़ूँ का गवाह दामने जल्लाद कुछ तो हो,
जब ख़ूँ-बहा[6] तलब करें बुनियाद कुछ तो हो,
गर तन नहीं ज़ुबाँ सही आज़ाद कुछ तो हो,
दुश्नाम[7], नाला[8], हाओ-हू[9], फ़रियाद कुछ तो हो,
चीख़े है दर्द ऐ दिले-बरबाद कुछ तो हो,

---

[1] अत्याचार सहन करने वाले। [2] प्रलय। [3] क़त्ल करने वाले का दबदबा। [4] हाथ-पाँव। [5] नृत्य का उत्सव। [6] ख़ून की क़ीमत। [7] गाली। [8] पुकार। [9] चिल्लाना।

बोलो कि शोरे-हश्र की ईजाद कुछ तो हो,
बोलो कि रोज़े अदल[1] की बुनियाद कुछ तो हो।

मिण्टगुमरी जेल
१३ अप्रैल, ५५ ई०

[1] न्याय।

कोई आशिक़ किसी महबूबा[1] से

याद की राह-गुज़र जिसपे इसी सूरत से,
मुद्दतें बीत गई हैं तुम्हें चलते-चलते,
ख़त्म हो जाये जो दो-चार क़दम और चलो,
मोड़ पड़ता है जहाँ दश्ते-फ़रामोशी[2] का,
जिस से आगे न कोई मैं हूँ न कोई तुम हो,

साँस थामे है निगाहें कि जाने किस दम,
तुम पलट जाओ गुज़र जाओ या मुड़ कर देखो,
गरचि वाक़िफ़ है निगाहें कि सब धोखा है,
गर कहीं तुम से हम-आग़ोश हुई फिर से नज़र,
फूट निकलेगी वहाँ और कोई राह-गुज़र,

फिर इसी तरह जहाँ होगा मुक़ाबिल पैहम[3],
साया-ए-ज़ुल्फ़ या ज़ुम्बिशे[4]-बाज़ू का सफ़र,

[1] प्रेमिका। [2] भूल जाने का जंगल। [3] निरंतर। [4] गति।

दूसरी बात भी झूठी है कि दिल जानता है,
याँ कोई मोड़, कोई दश्त, कोई घाट नहीं,
जिसके पर्दे में मेरा माहे-रवाँ[१] डूब सके,
तुमसे जलती रहे यह राह योंही अच्छा है,
तुमने मुड़कर भी न देखा तो कोई बात नहीं ।

चलता हुआ चाँद ।

अगस्त १९५५ ई०

शहर में चाके-गरेबाँ हुए नादीद[1] अब के,
कोई करता ही नहीं ज़ब्त की ताकीद अब के।
लुत्फ़ कर ऐ निगाहे-यार कि ग़म वालों ने,
हस्रते-दिल की उठाई नहीं तमहीद[2] अब के।
चाँद देखा तेरी आँखों में न होठों पे शफ़क़[3],
मिलती-जुलती है शबे ग़म से तेरी दीद अब के।
दिल दुखा है न वह पहला सा, न जाँ तड़पी है,
हम ही ग़ाफ़िल थे कि आई ही नहीं ईद अब के।
फिर से बुझ जायेंगी शम-एँ जो हवा तेज़ चली,
ला के रक्खो सरे-महफ़िल[4] कोई खुर्शीद[5] अब के।

कराची
१४ अगस्त, ५५ ई०

[1] गुम, गाइब। [2] भूमिका। [3] सुबह और शाम की लाली। [4] सभा में। [5] सूर्य।

ग़ज़ल

शैख़ साहिब से रस्मो-राह[1] न की,
शुक्र है ज़िन्दगी तबाह न की।
तुझ को देखा तो सरे-चश्म[2] हुए,
तुझ को चाहा तो और चाह न की।
तेरे दस्ते-सितम का इज्ज़[3] नहीं,
दिल ही काफ़र था जिसने आह न की।
थी शबे हिज्र काम और बहुत,
हमने फ़िक्रे-दिले-तबाह न की।
कौन क़ातिल बचा है शहर में 'फ़ैज़',
जिस से यारों ने रस्मो-राह न की।

मिण्टगुमरी जेल
मार्च, ५५ ई०

[1] मेल-जोल। [2] जिसकी आँखे भर गई हों। [3] कमी।

ग़ज़ल

यों बहार आती है इस बार कि जैसे क़ासिद[1],

कूचा-ए-यार से बे नीलो-मुराम[2] आता है।

हर कोई शहर में फिरता है सलामत-दामन[3],

रिन्द[4] मैख़ाने से शाइस्ता-ख़राम[5] आता है।

हविसे-मुतिरिबो-साक़ी[6] में परेशाँ अक्सर,

अब्र आता है कभी माहे-ताम[7] आता है।

शौक़ वालों की हज़ीं[8] महफिले-शब[9] में अब भी,

आमदे-सुबह की सूरत[10] तेरा नाम आता है।

अब भी ऐलाने-सहर[11] करता हुआ मस्त कोई,

दाग़े-दिल करके फरोज़ाँ[12] सरे-शाम आता है।

---

[1] संदेश ले जाने वाला। [2] निराश। [3] जिसका दामन न फटा हो। [4] शराबी। [5] सलीक़े से चलने वाला। [6] गाने वाले और पिलाने वाले की चाह। [7] पूरा चाँद। [8] शोक ग्रस्त। [9] रात की सभा। [10] भाँति। [11] प्रातः की घोषणा। [12] रौशन।

ग़ज़ल

सब्र क़त्ल होके तेरे मुक़ाबिल से आये हैं,
हम लोग सुर्ख़रू हैं कि मंज़िल से आये है।
शमए-नज़र, ख़याल के अंजुम[1], जिगर के दाग़,
जितने चिराग़ है तेरी महफ़िल से आये है।
उठकर तो आ गये हैं तेरी बज़्म[2] से मगर,
कुछ दिल ही जानता है किस दिल से आये हैं।
हर इक क़दम अजल[3] था हर इक गाम[4] ज़िन्दगी,
हम घूम फिर के कूचा-ए-क़ातिल से आये है।
बादे-ख़िज़ाँ[5] का शुक्र करो 'फ़ैज़' जिसके हाथ,
नामे[6] किसी बहार-शमाइल[7] के आये हैं।

---

[1] सितारे। [2] सभा। [3] मौत। [4] कदम। [5] पतझड की हवा। [6] पत्र।
[7] वसंत जैसी अदायें वाला प्रियतम।

ऐ दिले बेताब ठहर

तीरगी[1] है कि उमड़ती ही चली आती है।
शब की रग-रग से लहू फूट रहा हो जैसे ॥
चल रही है कुछ इस अन्दाज़ से नब्ज़े हस्ती।
दोनों आलम का नशा टूट रहा हो जैसे ॥
रात का गर्म लहू और भी बह जाने दो।
यही तारीकी तो है ग़ाज़ाए-रूख़सारे-सहर[2] ॥
सुबह होने ही को है ऐ दिले बेताब ठहर।
अभी ज़ंजीर छनकती है पसेपर्दाए साज़ ॥
मुत्लिकुल[3] हुक्म है शीराज़ाए-असबाब अभी।
साग़रे-नाब[4] में आँसू भी ढलक जाते हैं ॥

---

१. अन्धेरा। २. प्रातः के गाल का उबटन। ३. अन्तिम आज्ञा देने वाला। ४. शुद्ध शराब का प्याला।

लग्ज़िशे-पा[1] में हैं पाबन्दीए-आदाब अभी।
अपने दीवानों को दीवाना तो बन लेने दो।।
अपने मैख़ानों को मैख़ाना तो बन लेने दो।
जल्द यह सत्वते[2] असबाब भी उठ जायेगी।।
यह गिरां बारीए-आदाब भी उठ जायेगी।
ख़ाह ज़ंजीर छनकती ही छनकती ही रहे।।

क़िता

मताए-लौहो-क़लम[3] छिन गई तो क्या ग़म है।
कि ख़ूने दिल में डबोली हैं उँगलियाँ मैंने।।
ज़ुबां पे मुहर लगी है तो क्या कि रख दी है।
हरेक हल्क़ाए-ज़ंजीर में ज़ुबाँ मैंने।।

---

१. पाँव की लड़खड़ाहट। २. प्रभाव। ३. तख़्ती और क़लम की पूँजी।

ग़ज़ल

कभी कभी याद में उभरते हैं
नक़्शे-माज़ी[1] मिटे मिटे से।
वह आज़माइश दिलो नज़र की,
वह क़ुरबतें[2] सी वह फ़ासले से॥
कभी कभी आर्ज़ू के सहरा में,
आके रुकते हैं क़ाफ़ले से।
वह सारी बातें लगाओ की सी,
वह सारे उनवाँ[3] विसाल[4] के से॥
निगाहो-दिल को क़रार कैसा,
निशातो-ग़म[5] में कमी कहाँ की।
वह जब मिले हैं तो उनसे हर बार,
की है उल्फ़त नये सिरे से॥
बहुत गिराँ हैं यह ऐशे तनहा,
कहीं सुबकतर कहीं गवारा।
वह दर्द पिन्हां[6] कि सारी दुनिया,
रफ़ीक़ थी, जिसके वास्ते से॥

---

१. अतीत के चिन्ह। २. निकटता। ३. लक्षण। ४, मिलाप। ५. हर्ष और शोक। ६. अकेले होने का दुःख।

तुम्हीं कहो रिन्दो-मुहतसिब[1] में,
है आज शब फ़र्क कौन ऐसा।
यह आके बैठे हैं मैक़दे में,
वह उठ के आये हैं मैक़दे से।।

---

१. पीने वाला और पीने से रोकने वाला।

स्यासी लीडर के नाम

सालहा साल यह बेग्रासरा जकड़े हुए हात,
रात के सख्तो-स्याह सीने में पैवस्त[1] रहे।
जिस तरह तिनका समुन्दर से हो सरगर्मेसतेज़[2],
जिस तरह तीतरी कुहसार[3] पे यलग़ार[4] करे।
ग्रौर ग्रब रात के संगीनो-स्याह सीने में,
इतने घाग्रो हैं कि जिस सिम्त[5] नज़र जाती है।
जा-बजा नूर ने इक जाल सा बुन रक्खा है,
दूर से सुब्ह की धड़कन की सदा ग्राती है।
तेरा सरमाया तेरी ग्रास यही हात तो हैं,
ग्रौर कुछ भी नहीं पास यही हात तो हैं।
तुझ को मन्ज़ूर नहीं ग़लबाए-ज़ुल्मत[6] लेकिन,
तुझको मंज़ूर है यह हात क़लम हो जायें।
ग्रौर मशरिक़ की कमींगह[7] में धड़कता हुग्रा दिन,
रात की ग्राहनी-मैयत[8] के तले दब जाये।

---

१. खुबे हुए। २. लड़ने में लगा हुग्रा। ३. हाड़। ४. हमला ५. दिशा। ६. ग्रंधकार का ज़ोर। ७ ताक में छिप के बैठने का स्थान। ८. लोहे का ताबूत (ग्ररथी)।

मेरे हमदम मेरे दोस्त

गर मुझे इसका यक़ीं हो मिरे हमदम मिरे दोस्त,
गर मुझे इसका यक़ीं हो कि तिरे दिल की थकन।
तेरी आँखों की उदासी, तिरे सीने की जलन,
मेरी दिलजोई मिरे प्यार से मिट जायेगी।
गर मिटा हर्फ़े-तसल्ली वह दवा हो जिससे,
जी उठे फिर तिरा उजड़ा हुआ बेनूर दिमाग़।
तेरी पेशानी[1] से धुल जायें ये तज़लील[2] के दाग़,
तेरी बीमार जवानी को शफ़ा हो जाये।
गर मुझे इसका यक़ीं हो मिरे हमदम मिरे दोस्त,
रूज़ो-शब शामो-सहर मैं तुझे बहलाता रहूँ।
मैं तुझे गीत सुनाता रहूँ हल्के शीरीं[3],
आबशारों के, बहारों के, चमन-ज़ारों के गीत।
आमदे-सुब्ह के, महताब के, सय्यारों के गीत,
तुझ से मैं हुस्नो-मुहब्बत की हकायात कहूँ।
कैसे मग़रूर हसीनाओं के बर्फ़ाब से जिस्म,
गर्म हाथों की हरारत में पिघल जाते हैं।
कैसे इक चेहरे के ठहरे हुए मानूस[4] नक़ूश,
देखते-देखते यकबख़्त बदल जाते हैं।

१. माथा २. अनादर। ३ मीठे। ४. परिचित।

किस तरह आरजे-महबूब[1] का शफ़्फ़ाफ़ बिलूर,
यक-बयक बादाए-अहमर[2] से दहक जाता है।
कैसे गुलचीं के लिये झुकती है ख़ुद शाख़े गुलाब,
किस तरह रात का ऐवान[3] महक जाता है।
यूँही गाता रहूँ गाता रहूँ तेरी ख़ातिर,
गीत बुनता रहूँ बैठा रहूँ तेरी ख़ातिर।
पर मिरे गीत तिरे दुख का मुदावा[4] ही नहीं,
नग़मा जर्राह[5] नहीं मूनिसो-ग़मख़ार[6] सही।
गीत निश्तर तो नहीं मरहमे-आज़ार सही।
तेरे आज़ार का चारा नहीं, निश्तर के सिवा।
और यह सफ़्फ़ाक[7] मसीहा मिरे क़ब्ज़े में नहीं।
इस जहाँ के किसी ज़ीरूह के कब्ज़े में नहीं।
हाँ, मगर तेरे सिवा, तेरे सिवा तेरे सिवा।

---

१ प्रियतम के कपोल। २. सुर्ख़ शराब। ३. महल। ४. इलाज। ५. ज़ख़्म लगाने वाला। ६. प्यार और सहानुभूति रखने वाला। ७ ज़ालिम।

सुब्हे आज़ादी (अगस्त '४७)

यह दाग़ दाग़ उजाला, यह शब-गुज़ीदा-सहर[१],
वह इन्तिज़ार था जिसका, यह वह सहर तो नहीं।
यह वह सहर तो नहीं, जिसकी आर्ज़ू लेकर,
चले थे यार कि मिल जायगी कहीं न कहीं।
फ़लक[२] के दश्त में तारों की आख़िरी मंज़िल,
कहीं तो होगा शबे-सुस्त-मौज का साहिल।
कहीं तो जा के रुकेगा सफ़ीनाए[3]-ग़मे-दिल,
जवां लहू की पुर-असरार[४] शाह-राहों से।
चले जो यार तो दामन पे कितने हाथ पड़े,
दयारे-हुस्न[५] की बेसब्र ख़ाब-गाहों से।
पुकारती रहीं बाहें बदन बुलाते रहे,
बहुत अज़ीज़ थी लेकिन, रुख़े-सहर की लगन।
बहुत करीं[६] था हसीना-ए नूर का दामन,
सुबुक सुबक[७] थी तमन्ना, दबी दबी थी थकन।
सुना है हो भी चुका है फ़िराक़े ज़ुल्मतो-नूर,
सुना है हो भी चुका है विसाले मंज़िलो-गाम।
बदल चुका है बहुत अहले-दर्द का दस्तूर,

---

१. रात की डसी हुई सुब्ह। २. आकाश। ३. नाव। ४. रहस्य-मय। ५. रूपनगर। ६. निकट। ७. हल्की।

निशाते वस्ल हलालो-इज़ाबे हिज्र हराम,
जिगर की आग, नज़र की उमंग, दिल की जलन।
किसी पे चाराए-हिज्रां का कुछ असर ही नहीं,
कहाँ से आई निगारे-सबा[1] किधर को गई।
अभी चिराग़े-सरे-रह को कुछ ख़बर ही नहीं,
अभी गिरानिये-शब में कमी नहीं आई।
नजाते दीदाओ दिल की घड़ी नहीं आई,
चले चलो कि वह मन्ज़िल अभी नहीं आई।

---

१. हवा का मा'शूक़।

लौहे-क़लम

हम परवरिशे लौहो-क़लम करते रहेंगे।
जो दिल पे गुज़रती है रक़म[1] करते रहेंगे॥
अस्बाबे ग़मे-इश्क़ बहम करते रहेंगे।
वीरानी-ए-दौरां पे करम करते रहेंगे॥
हाँ तल्ख़ी-ए-अय्याम[2] अभी और बढ़ेगी।
हाँ अहले-सितम मश्क़े-सितम करते रहेंगे॥
मंज़ूर यह तल्ख़ी, यह सितम हमको गवारा।
दम है तो मुदावा-ए-अलम[3] करते रहेंगे॥
मैख़ाना सलामत है, तो हम सुर्ख़ी-ए-मै से।
तज़ईने-दरो-बामे-हरम[4] करते रहेंगे॥
बाक़ी है लहू दिल में तो हर अश्क[5] से पैदा।
रंगे-लबो-रूख़सारे-सनम करते रहेंगे॥
इक तर्ज़े-तग़ाफ़ुल[6] है सो वह उनको मुबारिक।
इक अर्ज़े तमन्ना है, सो हम करते रहेंगे॥

---

१. लिखते। २. दिनों का संकट। ३. दुःख का इलाज। ४. कांबे की छत और द्वारों की सजावट। ५. आँसू। ६. उपेक्षा की रीति।

क़िता

न पूछ जब से तिरा इन्तिज़ार कितना है।
कि जिन दिनों से मुझे तेरा इन्तिज़ार नहीं॥
तिरा ही अक्स है उन अजनबी बहारों में।
जो तेरे लब, तिरे बाज़ु, तिरा किनार नहीं॥

क़िता

सबा के हात में नर्मी है उनके हातों की।
ठहर ठहर कि यह होता है आज दिल को गुमां॥
वह हात ढूंढ रहे हैं बिसाते-महफ़िल में।
कि दिल के दाग़ कहाँ हैं निशस्ते दर्द कहाँ॥

दो आवाज़ें

पहली आवाज़

अब साई[1] का इमकां[2] और नहीं,
परवाज़[3] का मज़मूं हो भी चुका।
तारों पे कमन्दें फेंक चुके,
महताब[4] पे शबखूं[5] हो भी चुका।
अब और किसी फ़रदा[6] के लिये,
उन आँखों से क्या पैमां[7] कीजे।
किस ख़ाब के झूटे अफ़्सूं से,
तसकीने-दिले नादां कीजे।
जीने के फ़साने रहने दो,
अब इन में उलझ कर क्या लेंगे।
इक मौत का धंधा बाक़ी है,
जब चाहेंगे निबटा लेंगे।
यह तेरा क़फ़न वह मेरा क़फ़न,
यह मेरी लहद[8] वह तेरी है।

दूसरी आवाज़

हस्ती की मताए-बे-पायां[9],
जागीर तिरी है न मेरी है।

---

१. कोशिश। २. संभावना। ३. उड़ान। ४. चाँद। ५. रात का छापा। ६. आने वाली कल। ७. प्रतिज्ञा। ८. कब्र। ९. असीम।

इस बज़्म में अपनी मशअले-दिल,
बिस्मिल[1] है तो क्या, रख़शां[2] है तो क्या।
यह बज़्मे-चिरागां रहती है,
इक ताक़ अगर वीरां है तो क्या।
अफ़सुर्दा हैं गर अय्याम तिरे,
बदला नहीं मस्लिके शामो[3]-सहर।
ठहरे नहीं मौसिमे-गुल के क़दम,
क़ाइम है जमाले-श्मसो-क़मर[4]।
आबाद है वादी-ए-काकुलो-लब[5],
शादाबो-हसीं गुलगश्ते-नज़र।
मक़सूम है लज़्ज़ते-दर्दे-जिगर,
मौजूद है नेमते-दीदा-ए-तर।
इस दीदा-ए-तर का शुक्र करो,
इस ज़ौक़े-नज़र का शुक्र करो।
इस शामो-सहर का शुक्र करो,
इन श्मसो-क़मर का शुक्र करो।

पहली आवाज़

गर है यही मस्लिके-श्मसो-क़मर,
इन श्मसो-कमर का क्या होगा।
रानाई-ए-शब[6] का क्या होगा,
अन्दाज़े-सहर का क्या होगा।

---

१. घायल। २. चमकती हुई। ३. तरीका। ४. चाँद और सूर्य का सौन्दर्य। ५. ज़ुल्फ और होंठ। ६. रात का बांकपन।

जब ख़ूने-जिगर बर्फ़ाब बना,
जब आँखें आहन-पोश हुईं।
इस दीदा-ए-तर का क्या होगा,
इस ज़ौके-नज़र का क्या होगा।
जब शिअ्र के ख़ेमे राख हुए,
नग़मों की तनावें टूट गईं।
यह साज़ कहाँ सर फोड़ेंगे,
इस किल्के-गुहर[1] का क्या होगा।
जब कुंजे-क़फ़स मस्कन ठहरा,
और जेबो-गरेबाँ तौक़ो-रसन।
आये कि न आये मौसमे-गुल,
इस दर्दे-जिगर का क्या होगा।

दूसरी आवाज़

यह हाथ सलामत हैं जब तक,
इस ख़ूं में हरारत है जब तक।
इस दिल में सदाक़त है जब तक,
इस नुत्क़[2] में ताक़त है जब तक।
इन तौक़ो-सलासिल को हम तुम,
सिखलायेंगे शोरिशे - बर्बतो-नै[3]।
वह शोरिश जिसके आगे ज़बूं,
हंगामा-ए-मत्बले - क़ैसरो - कै[4]।
आज़ाद हैं अपने फ़िक्रो-अमल,
भरपूर ख़ज़ीना हिम्मत का।

---

१. मोतियों की लेखनी। २ वाक्-शक्ति। ३. सतार और बांसुरी।
४. राजाओं का नक्कार-ख़ाना।

इक उम्र है अपनी हर साइत,
इमरूज़ है अपना हर फ़रदा।
यह शामो-सहर यह श्मसो-कमर,
यह अख्तरो-कौकब अपने हैं।
यह लौहो-क़लम, यह तब्लो-अलम,
यह मालो-हशम सब अपने ैं।

दामने-यूसुफ़

जां बेचने को आये, तो बेदाम बेच दी,
ऐ अहले-मिस्र बजअ-ए तकल्लुफ़ तो देखिये।
इन्साफ़ है कि हुक्मे-अकूबत से पेशतर,
इकबार सूए-दामने-यूसुफ़ तो देखिये।

क़िता

फिर हस्र के सामां हुए ऐवाने-हविस में,
बैठे हैं जुअल-अद्ल[1] गुनहगार खड़े हैं।
हां जुर्मे-वफ़ा देखिये किस किस पे है साबित,
वे सारे ख़ताकार सरे-दार[2] खड़े हैं।

---

१. न्याय करने वाले। २. सूली के तख़्ते पर।

तौक़ो-दार का मौसिम

रविश रविश है वही इन्तिज़ार का मौसिम।
नहीं है कोई भी मौसिम बहार का मौसिम ॥
गिरां है दिल पे ग़मे-रूज़गार का मौसिम।
है आज़माइशे-हुस्ने-निगार का मौसिम ॥
खुशा[1] नजारा-ए-रूख़सारे यार की साइत[2]।
खुशा क़रारे दिले-बेक़रार का मौसिम ॥
हदीसे[3]-बादाओ-साक़ी नहीं तो किस मसरफ़[4]।
ख़रामे[5] अब्रे-सरे-कोहसार का मौसिम ॥
नसीब सुहबते-यारां नहीं तो क्या कीजे।
यह रक़्से-साया-ए-सरवो-चनार का मौसिम ॥
ये दिल के दाग़ तो दुखते थे यों भी पर कम कम।
कुछ अब के और है हिज्राने-यार का मौसिम ॥
यही जनूं का यही तौक़ो-दार का मौसिम।
यही है जब्र यही अख़्तियार का मौसिम ॥
क़फ़स है बसमें तुम्हारे, तुम्हारे बस में नहीं।
चमन में आतिशे-गुल[6] के निखार का मौसिम ॥
सबा की मस्त ख़रामी तहे-कमन्द नहीं।
असीरे-दाम[7] नहीं है बहार का मौसिम ॥
बला से हमने न देखा तो और देखेंगे।
फ़िरोग़े-गुलशनो[8] सौते-हज़ार[9] का मौसिम ॥

---

१. कितना अच्छा है। २ घडी। ३. कहानी। ४. काम का। ५. मटक चाल। ६ फूल की आग। ७ जाल में फंसा हुआ। ८. बाग़ की तड़क भड़क। ९. बुलबुल की आवाज़।

क़िता

तिरा जमाल निगाहों में लेके उट्ठा हूँ।
निखर गई है फ़िज़ा तेरे पैरहन[1] की सी।।
नसीम तेरे शबिस्तां से हो के ग्राई है।
मिरी सहर में महक है तिरे बदन की सी।।

---

१. लिबास।

सरे-मक़्तल[1]

क़व्वाली

कहां है मंज़िले-राहे-तमन्ना हम भी देखेंगे।
यह शब हम पर भी गुज़रेगी, यह फ़रदा हम भी देखेंगे।।
ठहर ऐ दिल जमाले रूए-ज़ेबा[2] हम भी देखेंगे।
ज़रा सैक़ल[3] तो होले तिश्नगी[4] बादा-गुसारों[5] की।।
दबा रक्खेंगे कब तक जोशे-सहबा[6] हम भी देखेंगे।
उठा रक्खेंगे कब तक जामो मीना हम भी देखेंगे।।
सला[7] आ तो चुके महफ़िल में उस कूए-मलामत[8] से।
किसे रोकेगा शोरे-पन्दे-बेजा[9] हम भी देखेंगे।।
किसे है जाके लौट आने का यारा[10] हम भी देखेंगे।
चले हैं जानो-ईमां आज़माने आज दिल वाले।
वह लायें लश्करे अग़यारो-ऐदा[11] हम भी देखेंगे।।
वे आएँ तो सरे-मक़्तल तमाशा हम भी देखेंगे।
यह शब की आख़िरी साइत गिरां कैसी भी हो हमदम[12]।।
जो इस साइत में पिनहां है उजाला हम भी देखेंगे।
जो फ़र्क़े-सुब्ह[13] पर चमकेगा तारा हम भी देखेंगे।।

---

१. बलि-वेदी पर। २. सुन्दर चेहरे का रूप। ३. साफ़। ४. प्यास। ५. रिन्दो। ६. शराब। ७. निमन्त्रण। ८. निरादर की गली। ९. अनुचित उपदेश। १०. साहस। ११. बेगाने और शत्रु। १२. साथी। १३. दिन का माथा।

ग़ज़ल

तुम आये हो न शबे-इन्तिज़ार गुज़री है।
तलाश में है सहर, बार बार गुज़री है॥
जनूं[1] में जितनी भी गुजरी बकार[2] गुजरी है।
अगरचि दिल पे ख़राबी हज़ार गुज़री है॥
हुई है हज़रते नासिह से गुफ़्तगू जिस शब।
वह शब जरूर सरे-कूए-यार गुज़री है॥
वह बात सारे फ़साने में जिसका ज़िक्र न था।
वह बात उनको बहुत नागवार गुज़री है॥
न गुल खिले हैं, न उनसे मिले, न मै पी है।
अजीब रंग में अब के बहार गुज़री है॥
चमन पे ग़ारते-गुलचीं[3] से जाने क्या गुज़री।
क़फ़स से आज सबा बेक़रार गुज़री है॥

१. पागलपन। २. काम में। ३. फूल तोड़ने वाले की लूट खसूट।

ग़ज़ल

तुम्हारी याद कि जब ज़ख्म भरने लगते हैं।
किसी बहाने तुम्हें याद करने लगते हैं।।
हदीसे-यार के उनवां निखरने लगते हैं।
तो हर हरीम[1] में गैसू संवरने लगते हैं।।
हर अजनबी हमें महरम[2] दिखाई देता है।
जो अब भी तेरी गली से गुज़रने लगते हैं।।
सबा से करते हैं गुर्बत-नसीब[3] ज़िक्रे-वतन।
तो चश्मे-सुब्ह में आँसू उभरने लगते हैं।।
वह जबभी करते हैं इस नुत्क़ोलब की बखियागरी।
फ़िज़ा में और भी नग़मे बिखरने लगते हैं।।
दरे क़फ़स पे अन्धेरे की मुहर लगती है।
तो 'फ़ैज़' दिल में सितारे उतरने लगते हैं।।

क़िता

हमारे दम से है कूए-जनूं में अब भी ख़जिल[4]।
अबाए[5] शैख़ो-क़बाए[6] अमीरो-ताजे-शही।
हमीं से सुन्नते[7]-मन्सूरो-क़ैस जिन्दा है।
हमीं से बाक़ी है गुलदामनी-ओ-कज कुल्ही[8]।।

---

१ चारदिवारी। २. जानने वाला। ३. परदेश के मारे हुए। ४. शर्मसार। ५-६. चोग़ा। ७. नीति। ८. ठाट-बाट।

दस्तक

शफ़क़ की राख में जल बुझ गया सितारा-ए-शाम।
शबे फ़िराक़ के गेसू फ़िज़ा मे लहराए।
कोई पुकारो कि उम्र होने आई है।
फ़लक को क़ाफ़लाए-रूज़ो-शाम ठहराए।
यह ज़िद है यादे-हरीफ़ाने-बादा-पैमा[1] की।
कि शब को चाँद न निकले न दिन को अब्र आए।
सबा ने फिर दरे-ज़िन्दां[2] पे आके दी दस्तक[3]।
सहर क़रीब है दिल से कहो न घबराए।

---

१. शराब पीने वाले मित्र। २. क़ैदखाना। ३. खटखटाना।

तुम्हारे हुस्न के नाम

सलाम लिखता है शायर तुम्हारे हुस्न के नाम।
बिखर गया जो कभी रंगे-पैरहन सरे-बाम[1]।
निखर गई है कभी सुब्ह कभी दोपहर कभी शाम।
कहीं जो क़ामते-ज़ेबा[2] पे सज गई है क़बा।
चमन में सरवो-सिनौबर सँवर गये हैं तमाम।
बनी बिसाते-ग़ज़ल जब डबो लिये दिल ने।
तुम्हारे साया-ए-रुख़सारो-लब में साग़रो-जाम।
सलाम लिखता है शायर तुम्हारे हुस्न के नाम।
तुम्हारे हाथ पे है ताबिशे-हिना[3] जब तक।
जहाँ में बाक़ी है दिलदारी-ए-अरूसे-सुख़न[4]।
तुम्हारा हुस्न जवां है तो मिहरबां है फ़लक।
तुम्हारा दम है तो दमसाज़ है हवाए-वतन।
अगरचि तंग हैं औक़ात, सख़्त है आलाम[5]।
तुम्हारी याद से शीरीं है तल्ख़ी-ए-अय्याम।
सलाम लिखता है शायर तुम्हारे हुस्न के नाम।

१. कोठे पर। २. सुन्दर कद। ३. मेंहदी की चमक दमक।
४. काव्य की दुल्हन। ५. रंज, दुख।

तराना

दरबारे वतन में जब इक दिन सब जाने वाले जायेंगे।
कुछ अपनी सज़ा को पहुचेंगे, कुछ अपनी जज़ा[1] ले जायेंगे॥
ऐ ख़ाक नशीनो उठ बैठो, वह वक्त करीब आ पहुँचा है।
जब तख्त गिराये जायेंगे, जब ताज उछाले जायेंगे॥
अब टूट गिरेंगी जंजीरे, अब ज़िन्दानों की ख़ैर नहीं।
जो दरिया झूम के उट्ठे हैं, तिनकों से न टाले जायेंगे॥
कटते भी चलो, बढ़ते भी चलो, बाज़ू भी बहुत हैं सर भी बहुत।
चलते भी चलो, कि अब डेरे मंज़िल ही पे डाले जायेंगे॥
ऐ, ज़ुल्म के मातो लब खोलो, चुप रहनेवालो चुप कब तक।
कुछ हश्र तो इनसे उट्ठेगा, कुछ दूर तो नाले जायेंगे॥

---

१. फल।

ग़ज़ल

इज्ज़[1] अहले - सितम की बात करो,
इश्क़ के दम क़दम की बात करो।
बज़्मे - अहले - तरब को शर्माओ,
बज़्मे असहाबे-ग़म की बात करो।
बामे-सरवत[2] के ख़ुश-नशीनों से,
अज़्मते-चश्मे-नम की बात करो।
है वही बात यों भी और यों भी,
तुम सितम या करम की बात करो।
ख़ैर हैं अहले-दैर[3] जैसे हैं,
आप अहले हरम की बात करो।
हिज्र की शब तो कट ही जायगी,
रूज़े-वस्ले-सनम की बात करो।
जान जायेंगे जानने वाले,
'फ़ैज' फरहादो-जम[4] की बात करो।

---

१. नम्रता। २. दौलत की छत। ३. बुतख़ाने के पुजारी।
४. जमशेद बादशाह।

ग़ज़ल

(नज़्रे सौदा)

फ़िक्र दिलदारी-ए-गुलज़ार करूँ या न करूँ,
ज़िक्रे मुर्ग़ाने-गिरफ़्तार करूँ या न करूँ।
किस्सा-ए-साज़िशे-अग़यार कहूँ या न कहूँ,
शिकवा-ए-यारे-तरहदार करूँ या न करूँ॥
जाने क्या वजअ है अब रस्मे-वफ़ा की ऐ दिल,
वजए-देरीना[1] पे इसरार करूँ या न करूँ।
जाने किस रंग में तफ़सीर करे अहले-हविस,
मदहे ज़ुल्फ़ों-लबो-रुख़सार करूँ या न करूँ॥
यों बहार आई है इस साल कि गुलशन में सबा,
पूछती है गुज़र इस बार करूँ या न करूँ।
गोया इस सोच में है दिल में लहू भर के गुलाब,
दामनो-जेब को गुलनार करूँ या न करूँ॥
है फ़क़त मुर्ग़े ग़ज़लख़ां कि जिसे फ़िक्र नहीं,
मुतदिल गर्मी-ए-गुफ़्तार करूँ या न करूँ।

---

१. पुरानी नीति-रीति

दो इश्क़

(१)

ताज़ा है अभी याद में ऐ साक़ी-ए-गुलफ़ाम[1],
वह अक्से रुख़े-यार से लहके हुए अय्याम।
वह फूल सी खिलती हुई दीदार की साइत,
वह दिल सा धड़कता हुआ, उम्मीद का हंगाम[2]।।
उम्मीद कि लो जागा ग़मे दिल का नसीबा,
लो शौक़ की तरसी हुई शब हो गई आख़िर।
लो डूब गये दर्द के बेख़ाब सितारे,
अब चमकेगा बेसब्र निगाहों का मुक़द्दर[3]।
इस बाम से निकलेगा तिरे हुस्न का ख़ुर्शीद,
उस कुंज से फूटेगी किरन रंगे-हिना की।
इस दर से बहेगा तिरी रफ़्तार का सीमाब[4],
इस राह पे फूलेगी शफ़क़ तेरी क़बा[5] की।
फिर देखे हैं वह हिज्र के तपते हुए दिन भी,
जब फ़िक्रे-दिलो-जां में फ़ुग़ां[6] भूल गई है।
हर शब वह स्याह बोझ कि दिल बैठ गया है,
हर सुब्ह की लौ तीर सी सीने में लगी है।
तनहाई में क्या क्या न तुझे याद किया है,
क्या क्या न दिले-ज़ार ने ढूण्ढी है पनाहें।
आँखों से लगाया है कभी दस्ते सबा को,
डाली हैं कभी गर्दने महताब में बाहें।

१. फूल जैसा रंग रखने वाला साक़ी। २. समय। ३. भाग्य। ४. पारा। ५. चोग़ा। ६ रोना धोना।

(२)

चाहा है इसी रंग में लैला-ए-वतन को,
तड़पा है इसी तौर से दिल इसकी लगन में,
ढूण्ढी है यों ही शौक़ ने आसाइशे-मंज़िल,
रुख़सार के ख़म में कभी काकुल[1] की शिकन में,
इस जाने-जहाँ को भी यूं ही कल्बो-नज़र ने,
हँस हँस के सदा दी, कभी रो रो के पुकारा,
पूरे किये सब हर्फ़े तमन्ना के तक़ाज़े,
हर दर्द को उजियाला, हर इक ग़म को संवारा,
वापस नहीं फेरा कोई फ़रमान जनूं का,
तनहा नहीं लौटी कभी आवाज़ जरस[2] की,
ख़ैरियते-जां राहते-तन सिहते-दामां,
सब भूल गई मस्लिहतें अहले-हविस की,
इस राह में जो सब पे गुज़रती है वह गुज़री,
तनहा पसे-ज़िन्दां कभी रुसवा[3] सरे बाज़ार,
गरजे हैं बहुत शैख़ सरे-गोशा-ए-मम्बर[4],
कड़के हैं बहुत अहले-हुकम[5] बरसरे-दरबार,
छोड़ा नहीं ग़ैरों ने कोई नावके[6]-दुश्नाम,
छूटी नहीं अपनों से कोई तर्ज़े मलामत,
इस इश्क़ न उस इश्क़ पे नादिम है मगर दिल,
हर दाग़ है इस दिल में बजुज़[7] दाग़े-नदामत।

---

१. ज़ुल्फ़। २. घण्टी। ३. बदनाम। ४. मंच के किनारे पर।
५. बुद्धिमान। ६. गाली का तीर। ७. सिवाये।

ग़ज़ल

गिरांनी-ए-शबे हिज्रां[1] दो चंद क्या करते,
इलाजे-दर्द तिरे दर्दमन्द क्या करते।
वहीं लगी है जो नाज़ुक मुकाम थे दिल के,
यह फ़र्क़ दस्ते-अदू[2] के गुज़न्द[3] क्या करते।
जगह जगह पे थे नासिह[4] तो कूबकू[5] दिलबर,
इन्हें पसन्द उन्हें नापसन्द क्या करते।
जिन्हें ख़बर थी कि शर्ते नवागरी[6] क्या है,
वह खुशनवा गिला-ए-क़ैदो-बन्द क्या करते।
गुलू-ए-इश्क़ को दारो - रसन[7] पहुँच न सके,
तो लौट आये तिरे सरबुलन्द, क्या करते।

---

१. जुदाई। २. दुगुनी। ३. शत्रु का हाथ। ४. घाव। ५. उपदेशक। ६. गली गली। ७. गीत गाना।

ग़ज़ल

वहीं है दिल के क़राइन[1] तमाम कहते हैं।
वह इक ख़लिश[2] कि जिसे तेरा नाम कहते हैं ।।
तुम आ रहे हो कि बजती हैं मेरी जंजीरें।
न जाने क्या मेरे दीवारो-बाम कहते हैं ।।
यही किनारे-फ़लक का स्यहीतरीं गोशा।
यही है मत्ला-ए-माहे-तमाम[3] कहते हैं ।।
पियो कि मुफ़्त लगादी है ख़ूने-दिल की कशीद।
गिरां है अबके मये लालरफ़ाम कहते हैं ।।
फ़क़ीहे[4] शहर से मै का जवाज़[5] क्या पूछें।
कि चाँदनी को भी हज़रत हराम कहते हैं ।।
नवाए-मुर्ग़[6] को कहते है अब ज़ियाने-चमन[7]।
खिले न फूल इसे इन्तिज़ाम कहते हैं ।।
कहो तो हम भी चलें 'फ़ैज़' अब नहीं सरे दार[8]।
वह फ़र्क़े-मर्तबा-ए-ख़ासो-आम कहते हैं ।।

---

१. सलीके, ढब । २ खटक, चुभन । ३ पूरा चाँद निकलने की जगह । ४. न्यायाध्यक्ष । ५ उचित होगा । ६. पंछी की आवाज़ । ७. बाग़ की हानि । ८. फाँसी के तख़्ते पर ।

ग़ज़ल

रंग पैराहन का खुशबू, ज़ुल्फ़ लहराने का नाम।
मौसिमे गुल है तुम्हारे बाम पर आने का नाम॥
दोस्तो उस चश्मो-लब की कुछ कहो, जिसके बग़ैर।
गुलसितां की बात रंगीं है न मैख़ाने का नाम॥
फिर नज़र में फूल महके दिल में फिर शमएँ जलीं
फिर तसव्वुर ने लिया उस बज़्म में जाने का नाम॥
दिलबरी ठहरा ज़ुबाने-ख़ल्क़ खुलवाने का नाम।
अब नहीं लेते परी-रू ज़ुल्फ़ बिखराने का नाम॥
अब किसी लैला को भी इक़रारे-महबूबी[1] नहीं।
इन दिनों बदनाम है हर एक दीवाने का नाम॥
मुहतसिब की ख़ैर ऊँचा है इसी के फ़ैज़ से।
रिन्द का, साक़ी का, मै का, ख़ुम का[2], पैमाने का नाम॥
हम से कहते हैं चमन वाले, ग़रीबाने-चमन।
तुम कोई अच्छा सा रख लो अपने वीराने का नाम॥
'फ़ैज़' उनको है तक़ाज़ाए-वफ़ा हमसे जिन्हें।
आशना[3] के नाम से प्यारा है बेगाने का नाम॥

•

१. माशूक होने को स्वीकार करना। २. मटका। ३. परिचित।

नौहा[1]

मुझ को शिकवा है मिरे भाई कि तुम जाते हुए,
ले गये साथ मिरी उम्रे-गुज़श्ता की किताब।
इस में तो मेरी बहुत क़ीमती तस्वीरें थीं,
इसमें बचपन था मिरा और मिरा अहदे-शबाब[2]।
इसके बदले मुझे तुम दे गये जाते जाते,
अपने ग़म का यह दमकता हुआ ख़ूँरँग गुलाब।
क्या करूँ भाई, यह इज़ाज़[3] मैं क्यों कर पहनूँ,
मुझ से ले लो मिरी सब चाक[4] क़मीज़ों का हिसाब।
आख़िरी बार है लो मान लो इक यह भी सवाल,
आज तक तुम से मैं लौटा नहीं मायूसे-जवाब[5]।
आके ले जाओ तुम अपना यह दमकता हुआ फूल,
मुझको लौटा दो मिरी उम्रे-गुज़श्ता की किताब।

---

१. फ़रियाद। २. यौवन का ज़माना। ३. सम्मान का चिन्ह। ४. फटी हुई। ५. उत्तर से निराश।

ईरानी तुलाबा[1] के नाम

(जो अम्न और आज़ादी की जद्दोजहद् में काम आये)

ये कौन सख़ी[2] हैं
जिन के लहू की
अशरफ़ियां, छन, छन, छन, छन
धरती की पैहम[3] प्यासी
किश्कौल[4] में ढलती जाती हैं
किश्कौल को भरती जाती हैं
ये कौन जवां हैं अर्ज़े-अजम[5]
ये लखलुट
जिन के जिस्मों की
भरपूर जवानी का कुन्दन
यों ख़ाक में रेज़ा रेज़ा है
यों कूचा कूचा बिखरा है
ऐ अर्ज़े-अजम, ऐ अर्ज़े अजम
क्यों नोच के हँस हँस फेंक दिये
उन आँखों ने अपने नीलम
उन होंठों ने अपने मरजां[6]

---

१. विद्यार्थी । २. दानी । ३. निरन्तर । ४. भिक्षा-पात्र । ५. ईरान की धरती । ६. लाल रंग का कीमती पत्थर ।

उन हाथों की बेकल चाँदी
किस काम आई, किस हाथ लगी ?
ऐ पूछने वाले परदेसी !
ये तिफ्लो-जवां[1]
उस नूर के नौरस[2] मोती हैं
उस आग की कच्ची कलियाँ है
जिस मीठे नूर और कड़वी आग
से ज़ुल्म की अन्धी रात में फूटा
सुब्हे बग़ावत का गुलशन
और सुब्ह हुई मन मन, तन तन
उन जिस्मों का चांदी सोना
उन चेहरों के नीलम, मरजां
जगमग जगमग, रख़शां, रख़शां[3],
जो देखना चाहे परदेसी
पास आय देखे जी भरकर
यह ज़ीस्त[4] की रानी का झूमर
यह अम्न की देवी का कंगन।

१. बच्चे और जवान। २. ताज़ा, नये। ३. चमकते हुए। ४. जीवन।

ग़ज़ल

दिल में अब यों तिरे भूले हुए ग़म आते हैं,
जैसे बिछड़े हुए काबे में सनम आते हैं।
इक इक करके हुए जाते है तारे रौशन,
मेरी मंज़िल की तरफ़ तेरे क़दम आते हैं।
रक़्से-मै[1] तेज़ करो, साज़ की लै तेज़ करो,
सूए-मैख़ाना सफ़ीराने-हरम[2] आते हैं।
कुछ हमीं को नहीं अहसान उठाने का दिमाग़,
वे तो जब आते हैं माइल-ब-करम[3] आते हैं।
और कुछ देर न गुज़रे शबे-फ़ुर्क़त से कहो,
दिल भी कम दुखता है वे याद भी कम आते हैं।

---

१. शराब का नृत्य। २. काबे के दूत। ३. दयायुक्त।

अगस्त १९५२ ई०

रौशन कहीं बहार के इमकां हुए तो हैं,
गुलशन में चाक चन्द गरेबां हुए तो हैं।
अब भी खिज़ां का राज है, लेकिन कहीं कहीं,
गोशे चमन चमन में गज़लखां हुए तो हैं।
ठहरी हुई है शब की स्याही वहीं मगर,
कुछ कुछ सहर के रंग परअफ़शां[1] हुए तो हैं।
इनमें लहू जला हो हमारा कि जानो माल,
महफ़िल में कुछ चिराग़ फ़िरौज़ां[2] हुए तो हैं।
हाँ कज करो-कुलाह कि सब कुछ लुटा के हम,
अब बेन्याज़े-गर्दिशे-दौरां[3] हुए तो हैं।
अहले-क़फ़स की सुब्हे-चमन में खुलेगी आँखें,
बादे-सबा से वादा-ओ-पैमां हुए तो हैं।
है दश्त[4] अब भी दश्त मगर ख़ूने-पा से 'फ़ैज़',
सैराब चन्द ख़ारे-मुग़ीलां[5] हुए तो हैं।

---

१. उड़ने के निकट। २ रौशन। ३. ज़माने की चाल से लापरवाह। ४. जंगल। ५. कीकर के कांटे।

निसार मैं तिरी गलियों पे

निसार मैं तिरी गलियों पे ऐ वतन कि जहाँ,
चली है रस्म कि कोई न सर उठा के चले।
जो कोई चाहनेवाला तवाफ़[1] को निकले,
नज़र चुरा के चले जिस्मो-जां बचा के चले।
है अहले-दिल के लिए अब यह नज़्मे-बस्तो-कुशाद[2],
कि संगो-ख़िश्त[3] मुक़य्यद है और सग[4] आज़ाद।
बहुत है ज़ुल्म कि दस्ते-बहाना-जू[5] के लिये,
जो चन्द अहले-जनूं तेरे नाम लेवा हैं।
बने हैं अहले-हविस मुद्दई भी, मुन्सिफ़ भी,
किसे वकील करें किससे मुन्सिफ़ी चाहें।
मगर गुज़ारने वालों के दिन गुज़रते हैं,
तिरे फ़िराक़ में यों सुब्हो-शाम करते हैं।
बुझा जो रौज़ने-ज़िन्दा[6] तो दिल यह समझा है,
कि तेरी मांग सितारों से भर गई होगी।
चमक उठे हैं सलासिल[7] तो हमने जाना है,
कि अब सहर तिरे रुख़ पर बिखर गई होगी।

---

१. भ्रमण। २. बांधने और खोलने का तरीका। ३. ईंट पत्थर। ४. कुत्ते। ५. बहाना ढूण्ढने वाला हाथ। ६. कारागार की खिड़की। ७. ज़न्जीरें।

ग़रज़ तसव्वुरे-शामो-सहर में जीते हैं,
गरिफ़्ते साया-ए-दीवारो-दर में जीते हैं।
यों ही हमेशा उलझती रही है ज़ुल्म से ख़ल्क़,
न उनकी रस्म नई है न अपनी रीत नई।
यों ही हमेशा खिलाये है हमने आग में फूल,
न उनकी हार नई है, न अपनी जीत नई।
इसी सबब से फ़लक का गिला नहीं करते,
तिरे फ़िराक़ में हम दिल बुरा नहीं करते।
गर आज तुझ से जुदा है, तो कल बहम होंगे,
यह रात भर की जुदाई तो कोई बात नहीं।
गर आज औज[1] पे है तालए-रक़ीब[2] तो क्या,
यह चार दिन की खुदाई तो कोई बात नहीं।
जो तुझसे अहदे-वफ़ा उस्तवार[3] रखते हैं,
इलाजे-गर्दिशे-लैलो-नहार[4] रखते हैं।

---

१. बुलन्दी। २. शत्रु के भाग्य का सितारा। ३. पक्का। ४. रात दिन।

ग़ज़ल

अब वही हर्फ़े-जनूं सबकी ज़ुबां ठहरी है,
जो भी चल निकली है वह बात कहाँ ठहरी है।
आज तक शैख़ के इकराम में जो शै थी हराम,
अब वही दुश्मने-दीं राहते जां ठहरी है।
है ख़बर गर्म कि फिरता है गुरेजां[1] नासिह,
गुफ़्तगू आज सरे-कूए-बुतां ठहरी है।
है वही आरिज़े[2]-लैला वही शीरीं का दहन[3],
निगहे-शौक़ घड़ी भर को जहाँ ठहरी है।
वस्ल की शब थी तो किस दर्जा सुबुक गुज़री थी,
हिज्र की शब है तो क्या सख्त गिरां ठहरी है।
इक दफ़ा बिखरी तो हाथ आई है कब मौजे-शमीम[4],
दिल से निकली है तो क्या लब पे फुग़ां ठहरी है।
दस्ते सैयाद भी आजिज़ है कफ़े-गुलचीं भी,
बूए-गुल ठहरी न बुलबुल की ज़ुबां ठहरी है।
आते आते यों ही पल भर को रुकी होगी बहार,
जाते जाते यों ही पल भर को ख़िज़ां ठहरी है।
हम ने जो तर्ज़-फुग़ां की है क़फ़स में ईजाद,
'फ़ैज़' गुलशन में वही तर्ज़े-बयां ठहरी है।

---

१. दौड़ता हुआ। २. लैला के कपोल। ३. मुँह। ४. सुगन्धी।

शीशों का मसीहा कोई नहीं

मोती हो कि शीशा, जाम[1] कि दुर[2]
जो टूट गया सो टूट गया
कब अश्कों से जुड़ सकता है
जो टूट गया सो छूट गया,
तुम नाहक टुकड़े चुन चुन कर
दामन में छुपाये बैठे हो
शीशों का मसीहा कोई नहीं
क्या आस लगाये बैठे हो।
शायद कि इन्हीं टुकड़ों में कहीं
वह सागरे-दिल[3] है जिसमें कभी
सद नाज़ से उतरा करती थी
सहबाए[4]-ग़मे-जानां[5] की परी
फिर दुनिया वालों ने तुमसे
यह साग़र लेकर फोड़ दिया
जो मै थी बहा दी मट्टी में
महमान का शह-पर[6] तोड़ दिया

---

१. प्याला। २. मोती। ३. दिल का प्याला। ४. शराब।
५. प्रियतम ६. बड़ा पंख।

ये रंगीं रेज़ें हैं शायद
उन शोख़ बिलौरीं सपनों के
तुम मस्त जवानी में जिनसे
ख़लवत[1] को सजाया करते थे
नादारी, दफ़तर, भूख और ग़म
इन सपनों से टकराते रहे
बेरहम था चौमुख पथराओ
ये कांच के ढांचे क्या करते।
या शायद इन ज़र्रों में कहीं
मोती है तुम्हारी इज़्ज़त का
वह जिससे तुम्हारे इज्ज़[2] पे भी
शमशाद-क़दों ने रश्क किया।
इस माल की धुन में फिरते थे
ताजिर भी बहुत, रहज़न भी कई
है चोर नगर, यां मुफ़्लिस[3] की
गर जान बची तो आन गई।
ये साग़र, शीशे, लालो-गुहर
सालिम हों तो कीमत पाते हैं,
यों टुकड़े टुकड़े हों तो फ़क़त
चुभते हैं लहू रुलवाते हैं।
तुम नाहक शीशे चुन चुन कर
दामन में छुपाए बैठे हो
शीशों का मसीहा कोई नहीं
क्या आस लगाये बैठे हो।
यादों के गरेबानों के रफ़ू

---

१. तनहाई, अकेलापन। २. नम्रता। ३. निर्धन।

पर दिल की गुज़र कब होती है
इक बख़िया उधेड़ा एक सिया
यों उमर बसर कब होती है ?
इस कार-गहे-हस्ती[1] में जहाँ
ये साग़र शीशे ढलते है
हर शै का बदल मिल सकता है
सब दामन पुर हो सकते हैं ।
जो हाथ बढ़े यावर[2] है यहाँ
जो आँख उठे वह बख़्तावर[3]
याँ धन दौलत का अन्त नहीं
हों घात में डाकू लाख मगर ।
कब लूट झपट से हस्ती की
दोकानें ख़ाली होती है
यां पर्बत पर्बत हीरे है
यां सागर सागर मोती है ।
कुछ लोग हैं जो इस दौलत पर
परदे लटकाते फिरते हैं
हर पर्बत को हर सागर को,
नीलाम चढ़ाते फिरते हैं ।
कुछ वे भी हैं जो लड़भिड़ कर
ये परदे नोच गिराते हैं
हस्ती के उठाईगीरों की
हर चाल उलझाये जाते हैं ।
इन दोनों में रण पड़ता है
नित बस्ती बस्ती नगर नगर

---

१. जीवन-कार्य-क्षेत्र । २. प्रबल । ३. सौभाग्यशाली ।

हर बसते घर के सीने में,
हर चलती राह के माथे पर
ये कालक भरते फिरते हैं
वे जोत जगाते रहते हैं
ये आग लगाते फिरते हैं
वे आग बुझाते रहते हैं।
सब सागर शीशे-लालो-गुहर
इस बाज़ी में बिद जाते हैं
उट्ठो सब ख़ाली हाथों को
इस रण से बुलावे आते है।

ग़ज़ल

आये कुछ अब्र कुछ शराब आये,
इसके बाद आये जो अज़ाब आये,
बामे-मीना[1] से माहताब[2] उतरे
दस्ते-साक़ी में आफ़ताब[3] आये
हर रगे ख़ूं में फिर चिराग़ाँ[4] हो
सामने फिर वह बेनक़ाब आये
उम्र के हर वरक पे दिल की नज़र
तेरी मिहरो-वफ़ा के बाब[5] आये
कर रहा था ग़मे-जहाँ का हिसाब
आज तुम याद बे-हिसाब आये
न गई तेरे ग़म की सरदारी
दिल मे यों रोज़ इन्क़िलाब आये
जल उठे बज़्मे-ग़ैर के दरोबाम,
जब भी हम ख़ानमां-ख़राब आये
इस तरह अपनी ख़ामशी गूँजी
गोया हर सिम्त से जवाब आये
'फ़ैज़' थी राह सरबसर मंज़िल
हम जहाँ पहुँचे कामयाब आये

---

१. सुराही का शिखर । २. चाँद । ३. सूर्य । ४. दीपमाला ।
५. अध्याय ।

ग़ज़ल

नज़्रे गालिब

किसी गुमां पे तवक्कु[1] ज़ियादा रखते हैं
फिर आज कूए-बुतां[2] का इरादा रखते हैं
बहार आयेगी जब आयेगी यह शर्त नहीं,
कि तिश्नाकाम[3] रहें गरचि बादा[4] रखते हैं
तिरी नज़र का गिला क्या, जो है गिला दिल को
तो हम से है कि तमन्ना ज़ियादा रखते हैं।
नहीं शराब से रंगीं तो ग़र्क़े ख़ूं है कि हम,
ख़याले-वज़ए-क़मीज़ो-लिबादा[5] रखते हैं
ग़मे-जहाँ हो ग़मे-यार हो कि तीरे-सितम,
जो आये आये कि हम दिल कुशादा रखते हैं।
जवाबे-वाइज़े-चाबुक-ज़ुबां[6] में 'फ़ैज़' हमें,
यही बहुत हैं जो दो हर्फ़ सादा रखते हैं।

---

१. आशा। २. हसीनों की गली। ३. प्यासे। ४. शराब।
५. चोगा। ६. तेज़ ज़ुबान रखने वाला उपदेशक।

ग़ज़ल

तेरी सूरत जो दिल-नशीं[1] की है,
आशना शक्ल हर हसीं की है।
हुस्न से दिल लगा के हस्ती की,
हर घड़ी हमने आतशीं[2] की है।
सुब्हे-गुल हो कि शामे मै-ख़ाना,
मदह[3] उस रूए-नाज़नीं[4] की है।
शेख़ से बेहरास[5] पीते हैं,
हमने तौबा अभी नहीं की है।
ज़िक्रे-दोज़ख़, बयाने-हूरो-कसूर[6],
बात गोया यहीं कहीं की है।
अश्क तो कुछ भी रंग ला न सके,
ख़ूं से तर आज आस्तीं[7] की है।
कैसे मानें हरम के सहल-पसन्द[8],
रस्म जो आशिक़ों के दीं[9] की है।
'फ़ैज़' औजे-ख़याल[10] से हम ने,
आस्मां सिन्ध की ज़मीं की है।

---

१. दिल में बैठने वाली। २. ज्वालामयी। ३. प्रशंसा। ४. प्रिया का मुखड़ा। ५. निर्भय होकर। ६. स्वर्ग के महल। ७. कुर्ते की बाँह। ८. आलस्यी। ९. ईमान। १०. विचारों का उत्कर्ष।

ज़िन्दाँ[1] की एक शाम

शाम के पेचोख़म सितारों से
ज़ीना ज़ीना उतर रही है रात
यों सबा पास से गुज़रती है
जैसे कह दी किसी ने प्यार की बात
सिह्ने ज़िन्दां के बेवतन अशजार[2]
सर-नगूं[3] महव हैं बनाने में
दामने आसमां पे नक्शो निगार।
शाना-ए-बाम[4] पर दमकता है
मिह्रबां चाँदनी का दस्ते-जमील[5]।
ख़ाक में घुल गई है आबे-नजूम[6]
नूर में घुल गया है अर्श का नील[7]।
सब्ज़ गोशों में नीलगूं साये
लहलहाते हैं जिस तरह दिल में
मौजे दर्द फ़िराक़े-यार आये।

---

१. कारागार। २. पेड़ पौदे। ३. सिर को झुकाये हुए। ४. छत का कंधा। ५. सुन्दर हाथ। ६. तारों की चमक। ७. आकाश।

दिल से पैहम ख़्याल कहता है
इतनी शीरीं है जिन्दगी इस पल
ज़ुल्म का ज़हर घोलने वाले
कामरां[1] हो सकेंगे आज न कल।
जलवा-ग़ाहे-विसाल की शमएं
वे बुझा भी चुके अगर तो क्या
चांद को गुल करें तो हम जानें।

---

१. सफल।

ज़िन्दां की एक सुब्ह

रात बाकी थी अभी, जब सरे-बालीं[1] आकर
चाँद ने मुझ से कहा "जाग सहर आई है
जाग इस शब जो मैए-ख़ाब[2] तिरा हिस्सा थी
जाम के लब से तहे-जाम उतर आई है।"
अपने जानां को विदा करके उठी मेरी नज़र
शबके ठहरे हुए पानी की स्याह चादर पर
जाबजा रक्स में आने लगे चाँदी के भँवर।
चाँद के हाथ से तारों के कंवल गिर गिर कर
डूबते, तैरते, मुरझाते रहे, खिलते रहे
रात और सुब्ह बहुत देर गले मिलते रहे।
सिहने-ज़िन्दां में रफ़ीक़ों[3] के सुनहरी चिहरे
सतहे-ज़ुलमत[4] से दमकते हुए उभरे कम कम
नींद की ओस ने इन चिहरों से धो डाला था
देश का दर्द, फ़िराक़े-रूख़े-महबूब का ग़म।
दूर नौबत हुई, फिरने लगे बेज़ार क़दम
ज़र्द फ़ाकों के सताये हुए पहरे वाले
अहले-ज़िन्दां के ग़ज़बनाक ख़रोशां-नाले[5]
जिनकी बाहों में फिरा करते है बाहें डाले।

१. सिरहाने की ओर। २. नीद की शराब। ३. साथी।
४. अन्धेरा। ५. शोर करती हुई फरियादें।

लज़्ज़ते ख़्वाब से मख़्मूर[1] हवायें जागीं
जेल की ज़हर भरी चूर सदायें जागीं
दूर दरवाज़ा खुला कोई, कोई बन्द हुआ
दूर मचली कोई ज़ंजीर, मचल के रोई
दूर उतरा किसी ताले के जिगर में ख़ंजर
सरपटकने लगा रह रह के दरीचा[2] कोई
गोया फिर ख़्वाब से बेदार हुए दुश्मने जां
संगो-फ़ूलाद से ढाले हुए जन्नाते-गिरां[3],
जिन के चंगुल में शबो-रूज़ है फरियादकुनां,
मेरे बेकार शबो-रूज़ की नाज़ुक परियाँ
अपने शहपूर[4] की राह देख रही हैं ये असीर[5]
जिसके तर्कश में हैं उम्मीद के जलते हुए तीर।

---

१. मादक। २. खिड़की। ३. भारी भरकम दानव। ४. कारागार से छुड़ाने वाला शहज़ादा। ५. बन्दी।

याद

दश्ते तनहाई में ऐ जाने-जहाँ लरज़ां[1] है
तेरी आवाज़ के साए तिरे होठों के सुराब[2]
दश्ते तनहाई में दूरी के ख़सो-खाक तले
खिल रहे हैं तिरे पहलू के सुमन और गुलाब।

उठ रही है कहीं कुर्बत[3] से तिरी साँस की आँच
अपनी खुशबू में सुलगती हुई मद्धम मद्धम
दूर उस पार चमकती हुई क़तरा क़तरा
गिर रही है तिरी तिलदार नज़र की शबनम।

इस क़दर प्यार से ऐ जाने-जहाँ रक्खा है
दिल के रूख़सार पे इस वक्त तिरी याद ने हात
यूं गुमां होता है गरचि है अभी सुब्ह फ़िराक़
ढल गया हिज्र का दिन आ भी गई वस्ल की रात

---

१. काँपते हुए। २. मृग मारीचिका। ३. नैकट्य।

ग़ज़ल

यादे-ग़ज़ाल-चश्मां[1] ज़िक्रे-समनं अज़ारां[2]
जब चाहा कर लिया है कुंजे-क़फ़स बहारां।
आँखों में दर्दमन्दी, होठों पर उज़्र-ख़्वाही[3]
जानानां-वार[4] आई शामे फ़िराक़े यारां।
नामूसे[5] जानो-दिल की बाज़ी लगी थी वरना
आसां न थी कुछ ऐसी राहे-वफ़ा-शअारां[6]।
मुजरिम हो ख़्वाह कोई रहता है नासिहों का
रूए-सुख़न हमेशा सूए-जिगर-फ़िगारां[7]।
है अब भी वक्त ज़ाहिद[8] तर्मीमे-ज़ुहद[9] करले
सूए-हरम चला है अम्बोहेबादा-ख़्वारां[10]।
शायद करीब पहुँची सुब्ह-विसाले-हमदम
मौजे-सबा लिये है खुशबूए-खुश-किनारां[11]
है अपनी किश्ते-वीरां[12] सर सब्ज़ इस यक़ीं से
आयेंगे इस तरफ़ भी इक रोज़ अब्रो-बारां।
आयेगी 'फ़ैज़' इक दिन बादे-बहार लेकर
तसनीमे[13]-मैं-फरोशां, पैग़ामे-मै-गुसारां[14]।

१. मृग जैसी आँखों वाले। २. चमेली जैसे कपोलों वाले। ३. क्षमा चाहना। ४. माशूक की तरह। ५. सम्मान। ६. विश्वस्त। ७. घायल हृदय वालों की ओर। ८. संयमी। ६ संयम में संशोधन। १०. शराबियों का टोला। ११. सुन्दर आलिंगन वाले। १२. उजड़ी हुई खेती। १३. स्वर्ग की एक नहर। १४. शराब पीने वाले।

ग़ज़ल

क़र्ज़े निगाहे-यार अदा कर चुके हैं हम
सब कुछ निसारेर-ाहे-वफ़ा कर चुके हैं हम।
कुछ इमतिहाने-दस्ते-जफ़ा कर चुके हैं हम
कुछ उनकी दस्तरस[1] का पता कर चुके हैं हम।
अब इहतियात की कोई सूरत नहीं रही
क़ातिल से रस्मो-राह सवा कर चुके हैं हम
देखें है कौन कौन जरूरत नहीं रही
कुए-सितम[2] में सब को ख़फ़ा कर चुके हैं हम।
अब अपना अख़तियार है चाहें जहाँ चलें
रहबर से अपनी राह जुदा कर चुके हैं हम।
उनकी नज़र में क्या करें फीका है अब भी रंग
जितना लहू था सर्फ़-क़बा[3] कर चके हैं हम।
कुछ अपने दिल की ख़ू का भी शुकराना चाहिये
सौ बार उनकी ख़ू का गिला कर चुके हैं हम।

---

१. पहुँच। २. अत्याचार की गली। ३. चोगे की भेंट।